संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -119 गुरूवार , 29 फरवरी 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

भारत के समुद्री तट पर सबसे अधिक नशीली दवाओं का भंडाफोड़

गुजरात तट से 3,300 किलो नशीले पदार्थ किए गए जब्त

नई दिल्ली,28 फरवरी 2024 (ए)। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स रैकेट के खिलाफ कार्रवाई करते हुए अरब सागर में 3300 किलोग्राम से अधिक ड्रग्स जब्त की है। इरान के चाबहार पोर्ट से चली नाव को गुजरात की सीमा से 60 नोटिकल माइल्स की दूरी पर पकड़कर पोरबंदर लाया गया।

नेशनल नारकोटिक्स ब्यूरो (एनसीबी), नौसेना और गुजरात पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में मिली सफलता पर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बधाई दी है। शाह ने कहा कि बीच समुद्र में पकड़ी गई अब तक सबसे अधिक डे्ग्स प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नशा मुक्त भारत के निर्माण की दिशा में अहम कदम है।

जांच एजेंसियों ने ऐसे लगाया पता

एनसीबी के महानिदेशक एसएन प्रधान के अनुसार एजेंसियां पिछले कुछ हफ्तों से डे्ग्स के बड़े खेप के अरब सागर के रास्ते आने की खुफिया जानकारी पर काम रही थी। खुफिया जानकारी पर सेना, गुजरात पुलिस और एनसीबी ने आगे काम किया और ड्रग्स के लदी नौका की पहचान

कर उसे जब्त किया। इसके लिए सेना की ओर से टीही विमानों की मदद ली गई और उसके कमांडो ने आपरेशन कर नौका पर मौजूद पांच लोगों को काबू में किया। नाव से ड्रग्स के अलावा एक थुराया और चार मोबाइल फोन बरामद किये गए थे, जिनकी जांच की जा रही है।

पांच तस्करों को किया गिरफ्तार

नाव से जिन पांच तस्करों को गिरफ्तार किया गया है, उनके पास कोई भी पहचान पत्र नहीं मिला है। उनसे पूछताछ की जा रही है और माना जा रहा है कि वे पाकिस्तान या ईरान के हो सकते हैं। डे्ग्स जिन पैकेटों में रखे गए थे, उन पर पाकिस्तान की एक खाद्य कंपनी का नाम छपा है, इससे साफ है कि तस्करी में पाकिस्तानी नागरिकों की सक्रिय भूमिका थी।

वैसे प्रधान ने यह नहीं बताया कि डे्ग्स की डिलिवरी कहां की जानी थी। उन्होंने कहा कि इसकी अभी जांच की जा रही है। वैसे खुफिया जानकारी में डे्ग्स को तमिलनाडु से आने वाली मछली पकड़ने वाली नाव में डिलिवर करने की बात कही गई थी। पकड़े गए ड्रग्स में 3110 किलोग्राम चरस/हशीश,158.3 किलोग्राम क्रिस्टलीयर पाउडर मेथ और 24.6 किलोग्राम हेरोइन शामिल है।

समुद्र में ड्रग की सबसे बड़ी खेप

प्रधान के अनुसार, इनकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 1300 करोड़ रुपये से 2000 करोड़ रुपये तक हो सकती है। वैसे मात्रा के हिसाब से बीच समुद्र में ड्रग की सबसे बड़ी खेप है। इस आपरेशन का नाम आपरेशन समुद्र मंथन दिया गया था।

इसके पहले आपरेशन समुद्रगुप्त के तहत मई 2023 में एनसीबी और नौसेना ने कोचिन के निकट समुद्र में 2500 किलोग्राम ड्रग्स जब्त किया था। एनसीबी के उप महानिदेशक ज्ञानेश्वर सिंह ने कहा कि जांच में मिली जानकारी को विदेशी एजेंसियों के साझा किया जाएगा, ताकि पूरे रैकेट के खिलाफ कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

संक्षिप्त खबरें

2019 से 2024 तक के ऐसे काम होंगे निरस्त

रायपुर,28 फरवरी 2024(ए)। वित्तीय वर्ष 2019-20 से 2023-24 के दौरान स्वीकृत काम जो अब तक शुरू नहीं हो पाए हैं, सरकार ने उन्हें निरस्त करने का आदेश दिया है। नगरीय प्रशासन विभाग ने इस संबंध में राज्य के सभी निकायों के प्रमुखों को पत्र जारी किया है। इसमें कहा गया है कि अधोसंरचना मद और राज्य प्रवर्तित योजना में अप्रारंभ सभी कार्य निरस्त कर दिए गए हैं।

राजीव गांधी के हत्यारे संथन की हुई मौत

राजीव के नाम पर ही बने सरकारी अस्पताल में ली अंतिम सांस

चेन्नई,28 फरवरी 2024 (ए)। देश के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या के मामले में दोषी संथन उर्फ सुथेन थिराजा की मौत हो गई। उसने बुधवार को चेन्नई के 'राजीव गांधी सरकारी अस्पताल' में अंतिम सांस ली। अस्पताल के अधिकारियों ने कहा कि सुबह 7ः50 बजे संथन ने अंतिम सांस ली। वो लिवर फेलियर के साथ क्रिप्टोजेनिक सिरोसिस से पीड़ित था। सूत्रों के मुताबिक, उसे 27 जनवरी को इलाज के लिए अस्पताल में एडमिट कराया गया था।

सीपीआर से सांसें लौट आईं, लेकिन

राजीव गांधी सरकारी अस्पताल के डीन ई थेरानिराजन ने कहा, संथन को बुधवार सुबह करीब 4 बजे कार्डियक अरेस्ट हुआ, लेकिन सीपीआर प्रक्रिया के बाद उसकी सांसें फिर से लौट आई थी और उसे ऑक्सीजन दिया गया और वेंटिलेटर पर भी रखा गया था। हालांकि, संथन पर इलाज का कोई असर नहीं हुआ और आज सुबह 7.50 बजे उसकी मौत हो गई।

श्रीलंका भेजा जायेगा शव

उन्होंने कहा, 'पोस्टमार्टम कराया जाएगा शव को श्रीलंका भेजने के लिए कानूनी व्यवस्थाएं की जा रही हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, संथन को गंभीर हालत में राजीव गांधी सरकारी जनरल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। संथन (55) को तिरुचि के महात्मा गांधी मेमोरियल सरकारी अस्पताल से यहां रेफर किया गया था।

पांचों जिला कलेक्टर ईडी के सामने होंगे पेश

ईडी समन पर सर्वोच्च न्यायालय की बड़ी टिप्पणी

नई दिल्ली,28 फरवरी 2024(ए)। ईडी यानी प्रवर्तन निदेशालय के समन को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने बड़ी टिप्पणी की है। शीर्ष न्यायालय का कहना है कि पीएमएलए की धारा 50 के तहत अगर किसी को तलब किया जाता है, तो उसे समन का सम्मान करना होगा और उसका जवाब भी देना होगा। खास बात है कि कोर्ट की तरफ से यह टिप्पणी ऐसे समय पर आई है, जब दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के लगातार 8 समन छोड़े जाने की चर्चाएं हैं। शीर्ष न्यायालय में मद्रास हाईकोर्ट के एक आदेश के खिलाफ ईडी ने याचिका दाखिल की थी। हाईकोर्ट ने कथित रेत खनन घोटाला में तमिलनाडु के के 5 डीएम को जारी समन पर रोक लगा दी थी। तमिलनाडु सरकार ने ईडी की तरफ से जारी समन को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी, जिसपर बाद में डिवीजन बेंच ने रोक लगा दी थी।

अब ईडी ने अंतरिम आदेश के खिलाफ शीर्ष न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। सुप्रीम कोर्ट ने रोक को हटा दिया और जिला कलेक्टरों को ईडी के सामने पेश होने के आदेश दिए हैं। मामले की सुनवाई जस्टिस बेला एम त्रिवेदी और जस्टिस पंकज मित्तल की बेंच कर रही थी। बार एंड बेंच की रिपोर्ट के अनुसार, बेंच ने कहा, यह देखा गया है कि अधिनियम के तहत जारी कार्यवाही के दौरान ईडी किसी भी व्यक्ति को सबूत पेश करने या उपस्थित होने के लिए तलब कर सकती है। आगे कहा गया, जिस किसी को भी समन जारी होते हैं, उनसे उम्मीद की जाती है कि वह ईडी के समन का सम्मान करेंगे और उनका जवाब देंगे। पीएमएलए की धारा 50 के तहत ईडी जिस व्यक्ति की मौजूदगी को जांच के दौरान जरूरी समझती है, उसे समन जारी कर सकती है।

सुप्रीम कोर्ट ने अस्पतालों में मनमाने वसूली को लेकर नाराजगी जताई

निजी अस्पतालों के इलाज रेट पर एक महत्वपूर्ण फैसला

नई दिल्ली,28 फरवरी 2024 (ए)। सुप्रीम कोर्ट ने निजी अस्पतालों के जरिए वसूले जाने वाले मनमानी पैसों को लेकर नाराजगी व्यक्त की है। सुप्रीम कोर्ट ने प्राइवेट अस्पतालों के इलाज रेट पर एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस असमानता पर चिंता व्यक्त की और केंद्र सरकार को 14 साल पुराने कानून को लागू करने में नाकाम रहने के लिए फटकार लगाई। यह कानून है क्लिनिकल स्थापना नियम (केंद्र सरकार)। इस कानून के अनुसार, राज्यों के साथ विचार-विमर्श करके महानगरों,शहरों और कस्बों में इलाज और बीमारियों के इलाज के लिए एक मानक दर तय की जानी चाहिए थी।नुसार, सुनवाई के दौरान सरकार ने अदालत को बताया कि उसने बार-बार राज्यों को इस मुद्दे पर लिखा है, लेकिन उनकी तरफ से कोई जवाब नहीं आया है। अदालत ने कहा कि नागरिकों को स्वास्थ्य सेवा का मौलिक अधिकार है और केंद्र अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता है। अदालत ने केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव को कहा कि वह एक महीने के भीतर स्टैंडर्ड रेट के नोटिफिकेशन जारी करने के लिए राज्यों के स्वास्थ्य सचिवों के साथ बैठक करें।

सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि उन्होंने इस बारे में राज्यों को कई बार चिट्ठी लिखी, लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नागरिकों को स्वास्थ्य सेवा का मौलिक अधिकार है और केंद्र सरकार इस आधार पर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकती। अदालत ने केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव को एक महीने के अंदर मानक दर अधिसूचित करने के लिए राज्यें के अधिकारियों संग बैठक बुलाने को कहा। सुप्रीम कोर्ट ने साफ-साफ कहा कि अगर केंद्र सरकार इस मामले का हल खोजने में विफल रहती है, तो हम याचिकाकर्ता की सीजीएचएस- निर्धारित मानक दरों को लागू करने की याचिका पर विचार करेंगे।

पूर्व सीएम राबड़ी देवी और बेटियों को नौकरी के बदले जमीन घोटाले में मिली नियमित जमानत

नई दिल्ली,28 फरवरी 2024 (ए)। दिल्ली की एक अदालत ने बुधवार को कथित नौकरी के बदले जमीन घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री और राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव की पत्नी राबड़ी देवी और उनकी बेटियों मीसा भारती तथा हेमा यादव को नियमित जमानत दे दी। आरोपियों को 9 फरवरी को मिली उनकी अंतरिम जमानत की अवधि समाप्त होने पर राउज एवेन्यू कोर्ट के विशेष न्यायाधीश विशाल गोग्ने के समक्ष पेश किया गया था। कोर्ट ने 27 जनवरी को प्रवर्तन

निदेशालय (ईडी) के पहले आरोपपत्र पर संज्ञान लिया था।न्यायाधीश गोगने ने बुधवार को उन्हें और सह-अभियुक्त हृदयानंद चौधरी को यह कहते हुए जमानत दे दी कि जांच के दौरान उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया था और आरोपियों के कानून से भागने का कोई संदेह नहीं है। वित्तीय जांच एजेंसी की ओर से पेश खेहल शारदा और विशेष लोक अभियोजक (एसपीपी) मनीष जैन ने कहा कि यदि जमानत दी जाती है, तो आरोपों की गंभीरता को देखते हुए कड़ी शर्तें लगाई जा सकती हैं।

सर्वोच्च न्यायालय से पति को राहत

पत्नी की मौत का दाग लिए न्याय के लिए भटका

नई दिल्ली,28 फरवरी 2024 (ए)। निर्दोष साबित होने में पूरी उम्र बीत गई। अपनी ही पत्नी की मौत का दाग लिए एक शख्स 30 साल से न्याय के लिए भटक रहा था। आज सुप्रीम कोर्ट ने महज 10 मिनट के भीतर उसे दोषमुक्त कर दिया। इस दौरान शीर्ष अदालत ने सिस्टम पर भी सवाल उठाए। इस बात पर अफसोस जताया कि यदि आपराधिक न्याय प्रणाली में आरोपी को बरी करने में 30 साल लग गए तो भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली स्वयं ही आरोपी के लिए सजा बन सकती है, आज इसका उदाहरण देखने को मिला।

सुप्रीम कोर्ट ने 1993 को एक महिला के आत्महत्या प्रकरण में उसके पति पर लगे उकसाने के आरोप को रद्द कर दिया है। मामले की सुनवाई जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने की। सुप्रीम कोर्ट ने मुकदमा शुरू होने के लगभग 10 मिनट के भीतर ही 30 साल पुराने केस में फैसला सुना लिया। फैसला सुनाते समय अदालत ने इस बात पर अफसोस जताया कि यदि आपराधिक न्याय प्रणाली को आरोपी को बरी करने में 30 साल लग गए तो यह समझा जा सकता है कि देश की आपराधिक न्याय प्रणाली खुद ही आरोपी के लिए सजा बन सकती है।

एक साल में देश में 750 से ज्यादा लोग बने धनकुबेर

नई दिल्ली,28 फरवरी 2024 (ए)। भारत में अत्यधिक अमीर व्यक्तियों की संख्या बीते साल यानी 2023 में सालाना आधार पर 6 प्रतिशत बढ़कर 13,263 हो गई है। नाइट फ्रैंक इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में बढ़ती समृद्धि के कारण वेरी हाई नेटवर्थ वाले व्यक्तियों की संख्या 2028 तक बढ़कर करीब 20,000 हो जाएगी।

यूएचएनडब्ल्यूआई को ऐसे व्यक्तियों के तौर पर परिभाषित किया जाता है, जिनकी कुल संपत्ति तीन करोड़ डॉलर या उससे अधिक है। रियल एस्टेट सलाहकार नाइट फ्रैंक इंडिया ने 'द वेल्थ रिपोर्ट-2024' जारी करते हुए कहा कि भारत में यूएचएनडब्ल्यूआई की संख्या 2023 में 6.1 प्रतिशत बढ़कर 13,263 हो गई, जबकि इससे पिछले वर्ष यह 12,495 थी।

भारत में यूएचएनडब्ल्यूआई की संख्या के 2028 तक बढ़कर 19,908 होने की उम्मीद है। कंपनी के चेयरमैन और एमडी शिशिर बैजल ने कहा कि देश में बेहद अमीरों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अगले पांच साल में इसमें 50.1 प्रतिशत की वृद्धि की उम्मीद है। रिपोर्ट के अनुसार, 90 प्रतिशत भारतीय यूएचएनडब्ल्यूआई की संपत्तियों में 2024 में बढ़ोतरी की उम्मीद है। वहीं 63 प्रतिशत की संपत्तियों के मूल्य में 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की उम्मीद है।

अखिलेश यादव को सीबीआई ने बुलाया

लखनऊ,28 फरवरी 2024 (ए)। सपा प्रमुख अखिलेश यादव को सीबीआई ने अवैध खनन के मामले में नोटिस जारी किया है। अखिलेश को कल यानी 29 फरवरी को दिल्ली में पेश होने के लिए समन दिया गया है। अखिलेश को इस मामले में बतौर गवाह पेश होना है। यह मामला अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री रहने के दौरान का है। उस समय अखिलेश यादव के पास ही खनन मंत्री का भी प्रभार था। इस मामले में रोक के बाद भी खनन का ठेका देने का आरोप है। 2016 से खनन घोटाले की जांच चल रही है। हाईकोर्ट ने इस मामले की जांच का आदेश दिया था।

पहली बार अखिलेश यादव को किसी मामले में

सीबीआई का समन भेजा गया है। मामला जा रहा है सपा अब इस मामले को गरमाएगी। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले समन को राजनीतिक नजरिए से भी देखा जा रहा है। अखिलेश यादव इससे पहले भी मोदी सरकार पर सीबीआई और ईडी के गलत इस्तेमाल का आरोप लगाती रही है। सपा के नेता ने इसे राजनीति से प्रेरित बताया है। कहा कि चुनाव से ठीक पहले सीबीआई और ईडी इसी तरह से एक्टिव हो जाती है।

अग्निवीर पुरुष भर्ती परीक्षा के परिणाम घोषित

छत्तीसगढ़ के 870 युवा चयनित,सीएम ने दी बधाई तकनीकी कारणों से क्लर्क कैटेगरी के रिजल्ट जारी नहीं हो पाए...

रायपुर,28 फरवरी 2024 (ए)। इंडियन आर्मी ने अग्निवीर पुरुष भर्ती परीक्षा के परिणाम जारी कर दिए हैं । छत्तीसगढ़ से 870 कैंडिडेट्स को इसमें सफलता मिली है। यह भर्ती दिसंबर 2023 में जांजगीर चांपा जिले में आयोजित की गई थी। भारतीय सेना में काम करने का सपना छत्तीसगढ़ के नौजवानों का पूरा हुआ है।सेना भर्ती कार्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक भर्ती प्रक्रिया में 5532 कैंडिडेट ने भाग लिया था। इसमें अग्निवीर जीडी, अग्निवीर टेक्निकल, अग्निवीर ट्रेड्समैन के लिए युवाओं का चयन हुआ है। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक अग्निवीर क्लर्क कैटेगरी के रिजल्ट 1-2 दिनों के भीतर आ जाएंगे। फिलहाल

तकनीकी कारणों से क्लर्क कैटेगरी के रिजल्ट जारी नहीं हो पाए हैंसीएम साय ने कहा, भारतीय सेना अग्निवीर भर्ती परीक्षा में चयनित प्रदेश के 870 युवाओं को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। देश सेवा के लिए आप सभी का ये उत्साह, ये जज्बा सराहनीय और स्वागतेय है। मां भारती के वीरों, आप सबको पुनः खूब बधाई। जय हिंद।

संपादकीय

किसान ही हैं असंतोष की जड़ें

कृषि निर्भर परिवारों का आम उपभोग खर्च औसत ग्रमीण उपभोग खर्च से नीचे चला गया है। 2022-23 की इस रिपोर्ट के मुताबिक ग्रामीण इलाकों में औसत घरेलू उपभोग खर्च 3,773 रुपये रहा। लेकिन कृषि निर्भर परिवारों का औसत खर्च 3,702 रुपये ही था। देश के किसान फिर आंदोलन की राह पर हैं। उनकी प्रमुख मांग है फसलों पर स्वामीनाथन फॉर्मूले के मुताबिक एमएसपी की कानूनी गारंटी और संपूर्ण ऋण माफी। इन मांगों को पूरा कराने के लिए कृषक समाज में जान बाजी पर लगा देने की भावना पैदा हुई है। इसकी वजह समझनी हो, तो ताजा जारी घरेलू उपभोग खर्च सर्वेक्षण की रिपोर्ट पर गौर करना उपयोगी होगा। इस रिपोर्ट से सामने आया है कि कृषि निर्भर परिवारों का आम उपभोग खर्च औसत ग्रमीण उपभोग खर्च से नीचे चला गया है।2022-23 की इस रिपोर्ट के मुताबिक ग्रामीण इलाकों में औसत घरेलू उपभोग खर्च 3,773 रुपये रहा। लेकिन कृषि निर्भर परिवारों का औसत खर्च 3,702 रुपये ही था। इसके पहले हुए हर घरेलू उपभोग खर्च सर्वे में कृषि आधारित परिवारों का औसत व्यय अन्य ग्रामीण परिवारों से अधिक रहा था। कृषि आधारित परिवारों में वे दिहाड़ी मजदूर और अन्य खेतिहर मजदूर भी शामिल हैं, जिनकी आमदनी का कोई अन्य स्रोत नहीं है। इस नई सूरत की वजह क्या है, यह जानना महत्त्वपूर्ण होगा।फिलहाल चूंकि इस संबंध में ठोस सूचनाएं उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए इसके बारे में अनुमान ही लगाए जा सकते हैं। संभव है कि इसका एक कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में दूसरे कारोबारों का बढना हो। मसलन, पशुपालन या बागवानी जैसे धंधों में खेती से ज्यादा मुनाफा हो रहा हो। या फिर यह वजह हो सकती है कि कोरोना महामारी के दौरान शहरों से गांव लौटे मजदूरों में से अनेक वहीं रह गए हैं, जिससे श्रमिकों की अधिकता के कारण उनकी मजदूरी घट गई हो।लेकिन कुल मिलाकर यह तस्वीर तो उभरती ही है कि खेती लगातार गैर-लाभकारी होती जा रही है। इसका बड़ा कारण लागत में लगातार बढ़ोतरी और फसल की कीमत में भारी उतार-चढ़ाव रहे हैं। इस पर भी जरूर गौर किया जाना चाहिए कि कृषि में सार्वजनिक पूंजीगत निवेश स्थिर बना हुआ है, जबकि जलवायु परिवर्तन की वजह से मौसम का अनिश्चय बढ़ गया है। इन कारणों से खेती अधिक जोखिम भारी पेशा बन गई है। ऐसे में किसानों और कृषि निर्भर अन्य तबकों में असंतोष पैदा होना एक स्वाभाविक घटना मानी जाएगी।

85 करोड़ युवा रचनात्मक शक्ति के बल पर देश को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं

सनातन संस्कृति का यह स्वर्णिम दौर चल रहा है और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सनातन संस्कृति के महत्त्वपूर्ण विचारों वसुधैव कुटुम्बकम अर्थात् पूरा विश्व एक परिवार है तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सभी प्रसन्न एवं सुखी रहे, के इन्हीं मूलमंत्रों के साथ सनातन संस्कृति के संवाहक के रूप में हम सभी के मार्गदर्शक बन रहे हैं और समस्त विश्व को सनातन के विचारों से अवगत करवा रहे हैं। एक आधुनिक राष्ट्र के रूप में हमारा इतिहास करीब साढ़े सात दशक पुराना है, लेकिन हमारी सभ्यता 5,000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत के खाते में अनगिनत उपलब्धियां हैं। उनके स्मरण के लिए इससे बेहतर और क्या अवसर हो सकता है कि जब हम अपनी आजादी के अमृतकाल में हैं, तो केवल इस दिशा में ठोस और एकजुट प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

भारत अध्यात्म, ज्ञान, कर्म, सेवा, साधना और करुणा का देश रहा है। भारत, राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए युवाओं की भूमिका का महत्व पहचानने वालों का देश रहा है। ऋषियों, शिक्षकों, कवियों, गुरुओं और वरिष्ठ-जनों ने युवा-शक्ति का यथेष्ट मार्गदर्शन करके उन्हें समाज, देश और दुनिया के कल्याण की ओर सदैव प्रेरित किया है। राष्ट्र-निर्माण के कार्य में युवाओं को प्रेरित करने मेंज्समाज की, मनीषियों और चिंतकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये मनीषी और चिंतक युवा शक्ति के लिए सदैव प्रेरक होते हैं। उनके 'रोल मॉडल' होते हैं। सामान्य तौर पर, ये रोल मॉडल समय-समय पर, देश-काल और परिस्थिति के अनुसार, बदलते रहते हैं। लेकिन कुछ रोल मॉडल कभी नहीं बदलते। ऐसे ही एक कालजयी रोल मॉडल हैं- स्वामी विवेकाननंद। स्वामी विवेकानंद के विचार दुनियाभर के युवाओं को प्रेरित करते रहे हैं। उन्हें युवाओं की ऊर्जा पर बहुत भरोसा था। वे कहते थे कि ङ्क 'युवा वो होता है जो बिना अतीत की चिंता किए अपने भविष्य के लक्ष्यों की दिशा में काम करता है'। स्वामी विवेकानंद भारत के युवा को अपने गौरवशाली अतीत और वैभवशाली भविष्य की एक मजबूत कड़ी के रूप में देखते थे। आप सभी को आज बस अपने अतीत को जानना है। क्योंकि अतीत को जानकर, उसे समझकर, आपको भविष्य के लक्ष्य तय करने हैं। अपने लिए, समाज के लिए, देश के लिए जो कुछ भी उत्तम और कल्याणकारी है, उसे प्राप्त करने के लिए काम करना है। आज का भारत, युवा शक्ति से भरपूर है। देश की 65 प्रतिशत जनसंख्या यानी लगभग 85 करोड़ युवा अपनी रचनात्मक शक्ति के बल पर हमारे देश को प्रगति की, मानव सभ्यता की नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर देखें तो आज से लगभग 9 वर्ष पहले शुरू किए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' की सफलता में युवाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने में, लोगों को प्रेरित करने में युवाओं ने प्रभावशाली योगदान दिया है। हमारे युवाओं में असीम प्रतिभा और ऊर्जा है। इस प्रतिभा और ऊर्जा का समुचित विकास और उपयोग किए जाने की जरूरत है। इस दिशा में प्रयास तेजी से किए जा रहे हैं और इन प्रयासों के परिणाम भी सामने आने लगे हैं। ज्ञान-विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी से लेकर, खेल के मैदान तक भारत के बेटे-बेटियां विश्व समुदाय पर अपनी छाप छोड़ रहे हैं। देश के कोने-कोने से नई-नई खेल प्रतिभाएं सामने आ रही हैं। खेल-कूद से हमारे अंदर टीम भावना का संचार होता है। सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता के लिए टीम भावना जगाने वाले ऐसे प्रयासों को बढ़ाने की जरूरत है।

आज इनोवेशन, इनक्यूबेशन और

स्टार्ट-अप की नई धारा का नेतृत्व भारत में कौन कर रहा है? आज अगर भारत दुनिया के स्टार्ट-अप ईको सिस्टम में टॉप तीन देशों में आ गया है, तो इसके पीछे किसका परिश्रम है? आज भारत दुनिया में यूनिकॉर्न पैदा करने वाला, एक बिलियन डॉलर से ज्यादा की नई कंपनी बनाने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश बना है, तो इसके पीछे किसकी ताकत है? इन सब सवालों का एक ही जवाब है, युवा। युवाओं की मेहनत और समर्पण के दम पर ही भारत आज नेतृत्वकारी भूमिका निभा रहा है।

आज से 10 साल पहले हमारे देश में औसतन चार हजार पेटेंट प्रतिवर्ष होते थे। अब इसकी संख्या बढ़कर सालाना 15 हजार पेटेंट से ज्यादा हो गई है, यानि करीब-करीब चार गुना। ये किसकी मेहनत से हो रहा है। कौन है इसके पीछे? मैं फिर से दोहराता हूं। इसके पीछे युवा ही हैं, नौजवान साथी हैं, युवाओं की ताकत है। 26 हजार नए स्टार्टअप का खुलना दुनिया के किसी भी देश का सपना हो सकता है। ये सपना आज भारत में सच हुआ है। तो इसके पीछे भारत के नौजवानों की ही शक्ति है, उन्हीं के सपने हैं। भारत के नौजवानों ने अपने सपनों को देश की जरूरतों से जोड़ा है, देश की आशाओं और आकांक्षाओं से जोड़ा है। देश के निर्माण का काम मेरा है, मेरे लिए है और मुझे ही करना है। इस भावना से भारत का नौजवान आज भरा हुआ है। आज देश का युवा नए-नए ऐप्स बना रहा है, ताकि खुद की जिंदगी भी आसान हो जाए और देशवासियों की भी मदद हो जाए। आज देश का युवा हेकाथॉन के माध्यम से, तकनीक के माध्यम से, देश की हजारों समस्याओं का समाधान खोज रहा है। आज देश का युवा ये नहीं देख रहा कि ये योजना शुरू किसने की, वो आज खुद नेतृत्व करने के लिए आगे आ रहा है। आज देश के युवाओं के सामर्थ्य से नए भारत का निर्माण हो रहा है। एक ऐसा नया भारत, जिसमें ईजी ऑफ डूविंग बिजीनेस भी हो और ईजी ऑफ लीविंग भी हो। एक ऐसा नया भारत, जिसमें लाल बत्ती कल्चर नहीं है, जिसमें हर इंसान बराबर है, हर इंसान महत्वपूर्ण है। एक ऐसा नया भारत, जिसमें अवसर भी हैं और उड़ने के लिए पूरा आसमान भी।

विश्व स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करके भारत के युवा आज आर्थिक विकास और राष्ट्रीय अर्थव्यस्था के लिए %मेरूदंड% सिद्ध हो रहे है। ऐसा नहीं है की भारत ने अपनी वैश्विक शक्ति किसी से उधार में ली है। अतीत में भी भारत विश्व गुरु की उपाधि से विभूषित रहा है। भारतीय युवा शक्ति का लोहा अमेरिकी के भूतपूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा भी मानते थे, तभी उन्होंने समय समय पर भोग में लिप्त अमेरिका के युवाओं को भारत से सीख लेने का परामर्श दिया था। भारत इस समय बहुत ही सुनहरे दौर से गुजर रहा है। हमारे देश में इस समय युवाओं की संख्या ज्यादा है। जिस देश में युवाओं की आबादी जितनी ज्यादा हो, वह उतनी ही तेजी से तरक्की करता है। इतिहास इसका गवाह है। ऐसे में यह सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि युवाओं की ऊर्जा नष्ट न होने पाए। उन्हें सभी क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा अवसर मुहैया कराए जाने चाहिए।

हमारे ऋषियों ने उपनिषदों में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय' की प्रार्थना की है। यानी, हम अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। परेशानियों से अमृत की ओर बढ़ें। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता। इसलिए, अमृतकाल का ये समय हमारे ज्ञान, शोध और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परंपराओं और विरासत से जुड़ी होंगी और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा। हमें अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपने संस्कारों को जीवंत रखना है। अपनी आध्यात्मिकता को, अपनी विविधता को संरक्षित और संवर्धित करना है। और साथ ही, टेक्नोलॉजी, इंफ्रास्ट्रक्चर, एजुकेशन, हेल्थ की व्यवस्थाओं को निरंतर आधुनिक भी बनाना है।

प्रख्यात कवि भीम भोई जी की कविता की एक पंक्ति है-

मो जीवन पछे नर्के पड़ी
थाउ,जगत उद्धार हेउ।

अर्थात अपने जीवन के हित-अहित से बड़ा जगत कल्याण के लिए कार्य करना होता है। जगत कल्याण की इसी भावना के साथ हमारा कर्तव्य है कि हम सभी को पूरी निष्ठा व लगन के साथ काम करना होगा। हम सभी एकजुट होकर समर्पित भाव से कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ेंगे, तभी वैभवशाली और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण होगा।

-प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी-

आपका दिन शुभ हो

वह सब मौजूद है
यहाँ आये बिना
वह सब कुछ है और नहीं है
जैसा कि यहाँ है
ऐसा हमें लगता है
उन्माद में...
हर दिन जीवन गतिशील है
और इसलिए गतिशील जीवन में
हमें असफलताओं का
सामना करना पड़ता है
जमींदोज होना
हमारा अस्तित्व है
अनुपस्थित के रूप में
सोच हम वो हैं जो नहीं है
मानो सोच एक साथ आ रहा है
केवल है यह पता चला है..
मैं इससे हूं यदि आपको स्पष्टता मिले
सिर्फ इसी दिन नहीं
हर दिन हमारे लिए यहाँ है
आपका दिन शुभ हो....

ओत्तेरी सेल्वा कुमार,
चेन्नई,
तमिलनाडु

क्या लोकसभा चुनावों में इंडिया गठबंधन भाजपा के लिये चुनौती बन पायेगा?

अंधेरों एवं निराशा के गर्त में जा चुके एवं लगभग बिखर चुके इंडिया गठबंधन के लिए कुछ अच्छी खबरों ने जहां उसमें नये उत्साह का संचार किया है वहीं भारतीय जनता पार्टी के लिये चिन्ता के कारण उत्पन्न किये हैं। पहले उत्तर प्रदेश और फिर दिल्ली में समाजवादी पार्टी और आम आदमी पार्टी से सीट बंटवारे पर बनी सहमति ने टूट की कगार पर पहुंचे इंडिया गठबंधन में वर्ष 2024 के आम चुनावों को लेकर संभावनाभरी तस्वीर को प्रस्तुत किया है। अब ये चुनाव दिलचस्प होने के साथ कुछ सीटों पर कांटे की टक्कर वाले होंगे। इन नये बन रहे चुनावी समीकरणों के बावजूद भाजपा के लिये अभी कोई बड़ा संकट नहीं दिख रहा है। भले ही इंडिया गठबंधन डींगे हांके कि वह भाजपा एवं उसके गठबंधन के लिए कड़ी चुनौती पेश करने की स्थिति आ गयी है। भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों का जब गठबंधन बना तभी यह आशंका की गयी कि यह कितनी दूर चल पायेगा, टिक पायेगा भी या नहीं? कुछ हालात तो ऐसे भी बने कि इसके तार-तार होने की संभावनाएं बलवती हुईं। भले ही अब कुछ सीटों पर दलों के बीच सहमति बनी हो लेकिन अभी कई महीने निकल जाने के बाद भी विधिवत रूप से इंडिया गठबंधन के संयोजक का नाम घोषित नहीं हो पाना अनेक सन्देहों एवं अटकलों का कारण बना हुआ है।

सत्ता तक पहुंचने के लिए जिस प्रकार दल-टूटन व गठबंधन हो रहे हैं इससे सबके मन में अकल्पनीय सम्भावनाओं की सिहरन उठती है। राष्ट्र और राष्ट्रीयता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगने लगा है। कुछ अनहोनी होगी, ऐसा सब महसूस कर रहे हैं। प्रजातंत्र में टकराव होता है। विचार फर्क भी होता है। मन-मुटाव भी होता है पर मर्यादापूर्वक। लेकिन अब इस आधार को ताक पर रख दिया गया है। राजनीति में दुश्मन स्थाई नहीं होते। अवसरवादिता दुश्मन को दोस्त और दोस्त को दुश्मन बना देती है। यह भी बड़े रूप में देखने को मिल रहा है। राजनीति नफा-नुकसान का खेल बन रहा है, मूल्य बिखर रहे हैं। चारों ओर सत्ता की भूख बिखरी है। पिछले कुछ समय से इंडिया गठबंधन को एक के बाद एक कई झटके लगे। पहले तो कांग्रेस ने ही पिछले साल दिसंबर के विधानसभा चुनावों में अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद में गठबंधन से जुड़ी बातचीत को ठंडे बस्ते में डाले रखा। बातचीत शुरू भी हुई तो नेताओं में न तो पहले जैसा जोश दिखा और न वैसी राजनीतिक जिजीविषा महसूस हुई। फिर गठबंधन के प्रस्ताव पर सबसे बढ़-चढ़कर काम करने वाले नीतीश कुमार ही उसे छोड़ गए। यूपी में रालोद के जयंत चौधरी भी इंडिया गठबंधन का हाथ थामते-थामते एनडीए में शामिल हो गए।

इंडिया गठबंधन एवं कांग्रेस ने अनेक झटके झेले। छोटे-बड़े नेताओं के कांग्रेस छोड़ने का सिलसिला भी तेज हुआ। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण का नाम खास तौर पर चर्चित रहा। इसे चाहे इन नेताओं का व्यक्तिगत अवसरवाद कहें या भाजपा और एनडीए नेतृत्व की सक्रियता एवं राजनीतिक कौशल इतना तय है कि इन नेताओं को कांग्रेस का भविष्य खास अच्छा नहीं दिख रहा। आम आदमी पार्टी एवं समाजवादी पार्टी जैसे दल अपनी साख बचाने एवं सत्ता के करीब बने रहने के लिये सीटों के बंटवारे पर सहमत हुए हैं, उसमें कांग्रेस का घुटने टेकना भी उसकी टूटती सांसों को बचाने की जद्दोजहद ही कहीं जायेगी। कांग्रेस एवं अन्य दलों के बीच सहमति के स्वर उभरने से आगामी लोकसभा चुनाव में अच्छा मुकाबला दिख सकता है। लेकिन अहम सवाल तो यही है कि क्या गठबंधन की गाड़ी आगे और हिचकोले नहीं खाएगी? क्या यह दावा पूरी दृढ़ता से किया जा सकता है? अरविन्द ने कांग्रेस से सीटों पर

सहमति बनाकर पलटूराम ही बने हैं। जी-भरकर एक-दूसरे को कोसने वाले जब हाथ मिलाएं तो आश्चर्य होना स्वाभाविक है। देखा जाये तो कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच चुनावी गठबंधन होना मूल्यहीनता एवं सिद्धान्तहीनता की चरम पराकाष्ठा है क्योंकि कांग्रेस की नीतियों के खिलाफ लड़ कर और आंदोलन खड़ा करके ही आम आदमी पार्टी का जन्म हुआ था। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली और पंजाब की सत्ता से कांग्रेस को बाहर किया और अपनी स्पष्ट बहुमत की सरकार बनाई। आम आदमी पार्टी के चमत्कारिक प्रदर्शन के चलते ही गुजरात में कांग्रेस ने अब तक का सबसे निराशाजनक प्रदर्शन किया। आम आदमी पार्टी ने गोवा में भी कांग्रेस को काफी नुकसान पहुँचाया और हरियाणा में भी अपने संगठन का आधार बढ़ाया। ताजा कांग्रेस एवं आम आदमी पार्टी की सहमति से कांग्रेस को ही नुकसान होना है। केजरीवाल की बजाय ममता बनर्जी ने अलग छाप छोड़ी है। उसने बंगाल में कांग्रेस के लिए उनकी मौजूदा दो लोकसभा सीटों को ही छोड़ने की बात कह कर कांग्रेस के अधिक सीटों पर दावा करने के कारण स्वतंत्र चुनाव लड़ने की घोषणा कर गठबंधन को धराशायी किया। ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल ही नहीं, बल्कि त्रिपुरा, असम और गोवा में भी स्वतंत्र चुनाव लड़ने की बात कह रही हैं, जिससे कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में निराशा ही हाथ लगी।

इंडिया गठबंधन के नये बन रहे सकारात्मक परिदृश्यों के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राजनीतिक सेहत पर कोई असर न झलकना उनकी राजनीतिक परिपक्वता की परिचायक है। 2024 के चुनावों में भाजपा के लिए 370 और एनडीए के लिए 400 सीटों का लक्ष्य तय करने के मोदी के लक्ष्य के सामने अभी भी कोई बड़ी चुनौती दिख नहीं रही है। इन बड़े लक्ष्यों को हासिल करने के लिए भाजपा एवं मोदी अपनी सीटें कहां से बढ़ा सकेंगे, इसके लिये भाजपा दोतरफा रणनीति पर काम कर रही है। पहली है, दक्षिणी राज्यों में पैठ बनाना। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि भाजपा पहले ही उत्तर-पश्चिम के कई राज्यों में चरम पर पहुंच चुकी है। दूसरी रणनीति है पुराने सहयोगियों को एनडीए में वापस लाने और नए सहयोगियों को जोड़ने की, जिसमें वह अब तक काफी हद तक सफल भी रही है। जदयू एनडीए के साथ फिर से आ गई है, रालोद भी एनडीए में लौट आई है, पंजाब में अकाली दल को वापस लाने के प्रयास जारी हैं और तेदेपा के साथ बातचीत अंतिम चरण में है। कुछ और पार्टियां एनडीए में शामिल हो सकती हैं। लेकिन एनडीए के विस्तार भर से भाजपा को 2024 में 370 सीटें नहीं मिलने वालीं। अभी उसे काफी जोड़-तोड़ करने होंगे।

-ललित गर्ग-

संघर्षों से मिलती है मंजिल

संघर्षों का कोई तौल-मोल ही नही
इससे बढ़कर कोई अनमोल नही।
संघर्षों से मिलता है जरूर मंजिल
कोई भी काम होता नही मुश्किल।
अगर होंगे तुम्हारे ये इरादे मजबूत
लक्ष्य पर लगेगा ही निशाना अचूक।
करले बुलंद हौसलों के उड़ानों को
और दिखादे तू हौसले जमानों को।
बाजुओं में ताकत,इरादा हो अटल,
मन में हो विश्वास,मन जाए मचल।
पानी मे भीगोगे तो लिबास बदलोगे
पसीने से भिगोगे इतिहास बदलोगे।
मन में हो दृढ़ता करलो दृढ़ संकल्प
बिना संघर्ष के नही है कोई विकल्प।
जो मन मे है सपने करो उसे साकार
पीछे न हटना, हो जाए आर या पार।

अशोक पटेल आशु
तुस्मा,शिवरीनारायण
छत्तीसगढ़

मंदारमाला सवैया

भाजी अमारी मिठाये चना दार,
दाई ह राँधे बने छाँट के।
बोहार भाजी मही मा मिठाये,
मजा भात मा ले बने चाँट के।।
आये परोसी धरे हे कटोरी,
चुरे साग देदे बने बाँट के।
आथे परोसी कभू काम संगी,
मया बाँध राखौ बने साँट के।।

राजकुमार निषाद राज
बिरोदा धमधा
दुर्ग छत्तीसगढ़

टूम अर टूम रो टण्टो

आज का महामानव मोह माया के जंजाल में ऐसा जकड़ा है कि उसे गहनता से सोचने, समझने, मनन करने का या तो समय नहीं है या वह इसकी जहमत नहीं उठाना चाहता। ऐसे लगता है कि इंसान आधुनिकता की दिखावटी चक्काचौंध में चौंधिया गया हैं। आज वह एकांत में बैठकर अपने फिजूल खर्चों पर विचार करने की हिम्मत नहीं करता अगर कोई हिम्मत कर भी लेता है तो परिवार के सदस्य उसकी बात को फीकी बात, पुरातनपंथी सोच का ताना कसते हुए हाशिये पर डाल देते हैं जहां से वह पुनः उस बात को पुरजोर से उठा ही नहीं पाता है। जबकि आसमान छूती महंगाई के दौर पर एक आम व्यक्ति अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाकर ही पार पा सकता है। आज हम अपने को परिवार, समाज, रिश्तेदारों में बड़ा धनाढ्य दिखाने के चक्कर में फिजूल खर्ची कर रहे हैं, जिनमें से कुछ रोजमर्रा के खर्चे होते हैं जिन पर कम धन खर्च होता है और कुछ खर्चे ऐसे होते हैं जो कभी-कभी किये जाते हैं लेकिन महंगे इतने होते हैं कि सालों की जमा पूंजी एक झटके में शून्य हो जाती है और हम कर्जदार हो जाते हैं।

सभी के घरों में ऐसा ही एक खर्चा है जिसे मां बोली में ''टूम'' यानि सोने के गहने कहते हैं। इस पर सबसे ज्यादा अनावश्यक खर्चा होता है जिसकी सहभागी बनती है हमारी मातृशक्ति। हमारी मां, बुआ, बहिन, पत्नी, बेटी शादी-विवाह, भात, छूछक, गृहप्रवेश इत्यादि अवसर आने से पहले ही घर के मुखिया को टूम(गहने) बनवाने के लिए माहौल तैयार करने लगती है। इसके लिए वो अपनी पड़ोसी व रिश्तेदारों का हवाला देती है कि उनकी बहू, बेटी के पास तो इस तरह की टूम(टेवटा, हार, मटरमाला, गजरा, बोरला, मांगटीका, गलकंठी, टड्डा, मैळ, हंसली, बाजूबंद, झूमका, इत्यादि) है। उसका डिजाईन बहुत बढ़िया है, मेरा डिजाईन बहुत पुराना हो गया, मुझे अब वह अच्छा नहीं लगता। इस तरह की तमाम बातें कही जाती हैं ताकि घर का मुखिया नई टूम करवाने की हामी भर दे। अगर मुखिया पैसे का बहाना करेगा तो तपाक से जबाव मिलेगा कि *पुरानी टूम दे दयो, थानै तो बस टूम गी घड़ाई देणी है* यानि नये गहने का मैकिंगचार्जेज देना होगा, आखिर में महिला सदस्यों के भावनात्मक दबाव के आगे बिना विचार किये मैकिंगचार्ज के नाम से हां कहनी पड़ती है, क्योंकि हमारी तर्कशीलता इतनी विकसित नहीं है कि हम उसे तर्क के माध्यम से समझा सकें।

हम अपने घर या आस-पड़ोस में देखते हैं कि सभी महिलाएं नियमित रूप से नाक में नथ या कोका, कान में बाली या झुमका, गले में चैन या छोटा पैंडल, अंगूली में एक अंगूठी व पैर में पायल-बिछिया ही पहनती है और बाकी सोना (अनावश्यक) घर में कहीं छुपाकर रखने की परम्परा रही है। लेकिन आजकल

सोने के भाव और डिजाईन खराब होने के भय से उन्हें बॉक्स सहित छुपाया जाना संभव नहीं है। इन गहनों के चोरी होन का भय हमेशा मन को चिंतित किये रहता है, कई बार गहनों पर झुंझाल आती है और लगता है कि *यह टूम कम और टण्टो ज्यादा है।* हमारी इसी चिंता को बाजारवाद ने गहराई से समझते हुए बैंक में लॉकर की व्यवस्था चालू कर दी ताकि हमारे से सुरक्षा के नाम पर प्रतिमाह किराये वसूली की जा सके। हम भी चिंता से बचने और सुरक्षा के लिए बैंकों में लॉकर किराये पर लेकर रखने लगे गए हैं, जिसका सालाना खर्चा साईज के हिसाब से तय है। छोटे साईज के लॉकर का विभिन्न बैंकों में किराया 2500 से 5000 रुपये व बड़े साईज का सालाना किराया 5000 से 10000 रुपये तक है। जो अनावश्यक गहनों को रखने का अनावश्यक सालाना खर्च जीवनपर्यंत आपको वहन करना पड़ता है। अनावश्यक सोना खरीद कर रखने से वह उपयोग में नहीं आता और उसका वजन भी बढ़ता नहीं है। अगर यही पैसा किसी कार्य में लगायें तो उससे परिवार को आर्थिक संबल और बच्चों को रोजगार मिलेगा।

आज परिवारों में जिस तरह शिक्षा बढ़ी है उसके अनुपात में ऐसी फिजूलखर्ची ज्यादा हुई है जिसका मुख्य कार्य केवल दिखावा है। आज सोने पर हो रहे अनावश्यक व्यय को रोकने की जरूरत आर्थिक रूप से कमजोर या मध्य वर्ग को सबसे ज्यादा है। जिसके पास अथाह धन संपदा है उसके कोई फर्क नहीं पड़ता। मध्यम वर्ग अपनी रोजना की मजदूरी में से पाई-पाई जोड़कर इक्कट्ठी करता है और बिना सोचे समझे एक दिन महंगे गहने खरीद कर उन्हें अलमारी में छुपाकर रखने को मजबूर होता है। ये गहने साल में दो-चार बार से ज्यादा नहीं पहने जाते हैं। यहां सोचने और विचारने वाली बात यह है कि हमारे इस कार्य से फायदा किसको हुआ, अगर विक्रेता (ज्वैलर्स) को हुआ तो क्या हमने पाई-पाई विक्रेता को आर्थिक संबल देने के लिए जोड़ी है।इस बात को कुछ लोग नकारते हुए सोना खरीदने की पैरवी जरूर करेंगे और कठिन समय में काम आने का हवाला जरूर देंगे। अगर आप यह सोच कर सोना खरीद रहें हैं कि कठिन समय में काम आयेगा तो फिर आप गहने की जगह सोने का बिस्कुट या सोने गी डळी खरीदो ताकि आप पर मैकिंगचार्ज का भार नहीं पड़ेगा। आज प्रत्येक दस ग्राम यानि एक तोला के भाव का 8 से 10 प्रतिशत मैकिंगचार्ज लगता है। जो प्रत्येक दस ग्राम पर 5000 से 8000 रुपये होता हैं, यह राशि खरीदार के कभी काम नहीं आती है। अगर आपको ये गहने कठिन समय में बेचने पड़े तो मैकिंगचार्ज का पैसा वापिस नहीं मिलेगा।

आज कमेरे वर्ग के परिवारों को गहनों के आर्थिक बोझ से बचाने की शक्त जरूरत है और यह जिम्मेदारी हमारी बहिन, बेटियों को आगे आकर लेनी चाहिए ताकि अपने घर को अनावश्यक आर्थिक भार से बचाया जा सके। आज हमें गहनों के खर्च में कटौती करके शिक्षा के खर्च को बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है। शिक्षा का मंदिर ही एक ऐसा स्थान है जहां पर खर्च किया हुआ धन बच्चे सूद सहित वापिस ला सकते हैं। इसलिए हमें टूम (गहनों) पर अनावश्यक धन व्यय करने से हमें बचना चाहिए।

पदमेश कुमार किसान
प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

डम-डम डमरू भोले

डम-डम-डमरू बाज रहा है,
भोले आने वाले हैं,
जन-जन के जीवन में मन भर,
सौगातें लाने वाले हैं।
डम-डम डमरू ....
जब-जब याद किया करते हैं,
भोले दस्तक देते हैं,
हम उनके चरणों की धूली,
मस्तक पर धर लेते हैं।
डम-डम डमरू ....
मन भावों की बना रंगोली,
भोले के मन भाऊंगा,
गीत सुरों में ढाल-ढाल कर,
हर धुन पर मैं गाऊंगा।
डम-डम डमरू ....
शिव-शिव शब्द पिरोकर भोले,
माला एक बनाऊंगा,
क्या पन्ना क्या हीरा-मोती,
मणियों की थाल सजाऊंगा।
डम-डम डमरू ....
भोले शब्द श्वांसों का साथी,
मन की बीन बजाऊंगा,
सिर पर हांथ धरेंगे भोले,
भोले का हो जाऊंगा।
डम-डम डमरू ..

कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी राम
गांधीनगर,
इन्दौर,मध्यप्रदेश

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

जिले में शांति व्यवस्था के लिए 80 निगरानी एवं गुंडा बदमाशों की लगवाई गई हाजरी

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने के लिए जिले के 80 निगरानी व गुंडा बदमाशों की हाजरी थानों में लगवाई गई। इस दौरान बदमाशों का थाने में उनका फोटोग्राफ एवं फिंगरप्रिंट लिए गए। पुलिस टीम द्वारा निगरानी एवं गुंडा बदमाशों को अपने-अपने निवास पर उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

वर्षों से आपराधिक गतिविधियों में शामिल रहने वाले लोगों की सूची तैयार कर पुलिस ने उन्हें थाने में तलब किया है। ताकि जिले में शांति व सूरक्षा व्यवस्था बनी रही। एसपी ने जिले के सभी थाना व चौकी प्रभारियों को निर्देश दिए थे कि थाना क्षेत्र के गुंडा बदमाशों की सूची तैयार कर थाने में हारी लगवाई जाए। एसपी के निर्देश पर जिले के समस्त थाना व चौकी क्षेत्रों में निवासरत 23 निगरानी बदमाश व 57 गुंडा बदमाशों की हाजरी लगवाकर गुजर बसर चेक किया गया। इस दौरान पुलिस ने निगरानी एवं गुंडा बदमाशों के अधतन फोटोग्राफ एवं फिंगरप्रिंट लिए

गए। पुलिस टीम द्वारा निगरानी एवं गुंडा बदमाशों को अपने-अपने निवास पर उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं। पुलिस टीम द्वारा समय-समय पर चेक किये जाने पर अपने निवास में उपस्थिति होना पाये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। निगरानी एवं गुंडा बदमाशों को थाना क्षेत्र से बाहर जाने से पूर्व सम्बंधित थाने में सूचना देते हुए ठहरने वाले निवास स्थान का पूर्ण पता देने की समझाइश दी गई, पुलिस टीम द्वारा मृत, वृद्ध एवं कई वर्षों से आपराधिक गतिविधियों से दूर रहने वाले निगरानी एवं गुंडा बदमाशों की अधतन सूची दर्ज की जा रही है।अभियान के तहत जिले के कुल 80 निगरानी एवं गुंडा बदमाशों की हाजरी थाने में लगवाई गई। निगरानी गुंडा बदमाशों को आपराधिक गतिविधियों से दूर रहने की सख्त चेतावनी दी गई। किसी भी आपराधिक गतिविधि में शामिल होना पाए जाने पर कड़ी वैधानिक कार्रवाई किए जाने के हिदायत दी गई है। सरगुजा पुलिस द्वारा निगरानी एवं गुंडा बदमाशों की चेकिंग अभियान सम्पूर्ण जिले में चलाकर आसामजिक तत्वों को कड़ा सन्देश दिया गया है।

पुलिस कर्मियों को शासकीय और पदीय दायित्व का निर्वहन करने से रोक रहे भाजपा कार्यकर्ता : विकल

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

डकैती के आरोपित भाजपा कार्यकर्ता को छुड़ाने के लिए अम्बिकापुर विधायक के भाई द्वारा प्रशिक्षु डीएसपी से दुर्व्यवहार और धमकी के मामले में आरोपित भाजपा नेताओं की गिरफ्तारी की मांग को लेकर युवा कांग्रेस ने पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा है। युवक कांग्रेस जिला अध्यक्ष विकल झा के नेतृत्व में युवक कांग्रेसियों ने पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंप कर कहा कि इंटरनेट मीडिया में प्रसारित वीडियो में लखनपुर थाना में घुसकर विधायक राजेश अग्रवाल के बड़े भाई भाजपा नेता विजय अग्रवाल प्रशिक्षु उप पुलिस अधीक्षक जो कि लखनपुर थाना प्रभारी भी थे, उनसे दुर्व्यवहार करते, धमकी देते हुए नजर आ रहे हैं। विधायक के भाई अमेरा खदान में डकैती के आरोपी भाजपा कार्यकर्ता को छुड़ाने के लिए पुलिस पर दबाव बना पुलिस कर्मियों को शासकीय और पदीय दायित्व का निर्वहन करने से रोक रहे थे। पुलिस कर्मियों से दुर्व्यवहार करने वालों पर कानूनी कार्रवाई न कर प्रशिक्षु पुलिस अधीक्षक को ही थाना प्रभारी के पद से हटा दिया गया है। इस तरह के कृत्य से अपराधियों का मनोबल बढ़ा है।

युवक कांग्रेसियों ने विधायक के भाई पर कानून सम्मत कार्रवाई की मांग की है। जल्द कार्रवाई न होने पर युंकइयों ने बड़ा आंदोलन करने की चेतावनी दी है। ज्ञापन सौंपने वालो में आशीष वर्मा, दिनेश शर्मा, रजनीश सिंह, उत्तम राजवाड़े, अविनाश ठाकुर, विकास केशरी, आकाश अग्रहरि, हिमांशु अग्रवाल,सतीश घोष, केदार यादव सहित युवक कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल थे।

10 लीटर अवैध महुआ शराब के साथ महिला गिरफ्तार

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

आबकारी विभाग के संभागीय उडऩदस्ता टीम ने 10 लीटर अवैध महुआ शराब के साथ महिला को गिरफ्तार किया है। लुण्ड्रा थाना क्षेत्र की रहने वाली है। टीम ने उसके खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

आबकारी विभाग के संभागीय उडऩदस्ता टीम को मुखबिर से जानकारी मिली कि लुण्ड्रा थाना क्षेत्र के ग्राम बहेराडीह निवासी गायत्री साहू द्वारा हुआ शराब तैयार कर बिक्री किया जा रहा है। सूचना पर संभागीय उडऩदस्ता टीम ने बुधवार को गायत्री साहू के घर में छापेमारी कर 10 लीटर अवैध महुआ शराब जब्त किया है।

टीम ने महिला के खिलाफ छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम की धारा 34(1)क, 34(2) एवं 59 (क) के तहत कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। कार्रवाई में सहायक जिला आबकारी अधिकारी रंजीत गुप्ता के साथ आबकारी मुख्य आरक्षक रमेश दुबे, रामाधार कुशवाहा एवं कुमारूराम नगर सैनिक गणेश पांडे, एवं महिला सैनिक राजकुमारी उपस्थित रहे।

महतारी वंदन योजना : केवाईसी व आधार लिंक कराने बैंकों में लगी महिलाओं की भीड़

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

महतारी वंदन योजना के राज्य सरकार ने प्रदेश के हर विवाहित महिलाओं को हर महीने 1 हजार रुपए देने की घोषणा की है। इसके लिए आवेदन प्रक्रिया अंतिम चरण में है। महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च को महिलाओं के खाते में भुगतान किया जाना है। इसे लेकर महिलाओं में उत्साह है। वहीं कई ऐसी महिलाएं हैं जिनका आवेदन रिजेक्ट कर दिया गया है उनके चेहरे पर मायूसी भी देखी जा रही है। नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया से महिलाओं के खाते का जांच कराया जा रहा है। जिसमें कई महिलाओं के बैंक खाते की जानकारी में आधार सीडिंग का मिलान नहीं हो रहा है। हितग्राहियों से त्वरित रूप से बैंकों के माध्यम से आधार सीडिंग अपडेट करने की अपील की गई है। ताकि निर्धारित तिथि को उनके आधार सीडेड

बैंक खातों में राशि का भुगतान हो सके। जिन हितग्राहियों के बैंक खाते आधार सीडेड नहीं है अथवा उनका आधार नंबर अपडेटेड नहीं है। ऐसे महिलाएं बैंक पहुंचकर अपने खाते की जांच करा रहे हैं। इस लिए बैंकों में महिलाओं की भीड़ देखी जा रही है। अपने खाते को आधार से लिंक कराने व केवाईसी कराने महिलाओं को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सुबह से महिलाएं बैंक पहुंचकर खाते को अपडेट कराने में लगे हैं। वहीं बैंकों में भीड़ होने के कारण महिलाओं का काम समय पर नहीं हो पा रहा है। महिला बाल विकास अधिकारी जेआर प्रधान ने बताया कि महतारी वंधन योजना के तहत कुल 2 लाख 32 हजार 247 आवेदन आए हैं। जिसमें सभी को सत्यापित किए गए हैं। वहीं दवा आपत्ति की अंतिम सूची 1 मार्च को जारी की जानी है। इसके बाद ही 8 मार्च को महिलाओं के खाते में भुगतान किया जाना है। महिला बाल विकास अधिकारी जेआर प्रधान ने बताया कि कई महिलाओं के बैंक खाते में एनपीसीआई का प्रोबलम सामने आया है। जिसमें कई महिलाओं का केवाईसी, खाते से आधार लिंक न होना जैसे प्रोबलम सामने आया है। महिला बाल विकास अधिकारी ने बताया कि इस संबंध में एलडीएम से चर्चा कर ऐसे महिलाओं के प्राथमिकता से समाधान करने की बात कही गई है।

महाशिवरात्रि पर निकलेगी भगवान शिव की ऐतिहासिक बारात

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी शिवशंकर कीर्तन मंडली केदारपुर द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर भगवान शिव की ऐतिहासिक बारात धूमधाम से निकाली जाएगी। इस संदर्भ में मंडली सदस्यों का एक दल मां गौरी मंदिर पहुंचा,जहां पारंपरिक विविध से गौरीशंकर के विवाह निमंत्रण पत्र का आदान-प्रदान किया गया। 44 वर्षों से शिव मंदिर सहेली गली केदारपुर से प्रति वर्ष मंडली के मुख्य तत्वावधान में भगवान शिव की आकर्षक बारात एवं शोभा यात्रा पारंपरिक रूप से निकाली जा रही है। इस संदर्भ सहेली गली स्थित शिव मंदिर परिषर में भजनाश्रम में एक बैठक आहूत की गई। जिसमें मंडली के सदस्यों की सहमति से मंडली के सदस्य भोलानाथ विश्वकर्मा एवं संजय मिश्रा को संयुक्त रूप कार्यक्रम प्रभारी की जिम्मेदारी दी गई है। उन्होंने बताया कि शासन द्वारा जारी निर्देशों को ध्यान में रखते हुए महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर 8 मार्च को भगवान शिव की आकर्षक बारात एवं शोभा यात्रा निकाली जाएगी। जिसकी तैयारी जोरों पर है। वहीं शिव बारात की शोभा बढ़ाने व सहभागिता हेतु प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी केनाबांध, मायापुर, काली मंदिर एवं अन्य मंडलियों को आमंत्रित किया जएगा।

नाटक के जरिए लैंगिक अपराध के विरुद्ध युवाओं ने उठाई आवाज, बेहतर समाज के निर्माण में हर व्यक्ति की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण

- संवाददाता -
अंबिकापुर, 28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

महिला बाल विकास विभाग एवं यूनिसेफ के संयुक्त तत्वावधान में मैनपाट में आयोजित महोत्सव के दौरान जिला कार्यक्रम अधिकारी जे. आर. प्रधान, महिला एवं बाल विकास विभाग के मार्गदर्शन तथा यूनिसेफ के जिला समन्वयक श्रीमती ममता चौहान के नेतृत्व में एनएसएस स्वयंसेवकों के माध्यम से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम अंतर्गत लैंगिक अपराध के विरुद्ध एकजुट होने का संदेश दिया गया। युवाओं द्वारा नाटक प्रस्तुत कर

लैंगिक अपराध को समाज से पूर्णतः समाप्त करने व सामाजिक बदलाव हेतु प्रस्तुति दी गई।

नाटक के अंत में अच्छे समाज के निर्माण के लिए हर व्यक्ति की जिम्मेदारी और कर्तव्य पर प्रेरित किया गया।बैनर, पोस्टर के माध्यम से लोगों को लैंगिक अपराधों के प्रति जागरूक करने जानकारी दी गई। सामाजिक बदलाव में समस्त नागरिकों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिए सभी जिम्मेदार बनकर बाल सरंक्षण और बाल अधिकार को समझें और उनका पालन करें जिससे समाज सुंदर और बेहतर होगा। इस महत्वपूर्ण प्रस्तुति पर जिला प्रशासन द्वारा एनएसएस स्वयंसेवकों को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। महोत्सव में उपस्थित सभी लोगों ने इस प्रस्तुति को सराहा। एनएसएस स्वयंसेवकों में सिंध्या सागर, वर्षा टोप्पो, शैलजा भगत, प्रिया सरकार, मंजू कुशवाहा, साधना तिर्की, नवनीत मिंज, अमित, शिव और राहुल शामिल रहे।

किसी संस्था के पूर्व छात्र उसके अतीत का प्रतिबिंब,उसके वर्तमान का प्रतिनिधित्व और उसके भविष्य की होते हैं कड़ी

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ राज्य के सुदूर उत्तरांचल में विस्तृत सरगुजा जिले के मुख्यालय के रूप में स्थित अंबिकापुर का राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अपनी स्थापना के 64 वर्ष पूर्ण कर चुका है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष लगभग 6 हजार छात्र-छात्राएं अध्यनरत रहते हैं। महाविद्यालय में समाज विज्ञान, कला एवं मानविकी भौतिक एवम् जीवन विज्ञान, वाणिज्य ,विधि तथा समसामयिक कंप्यूटर विज्ञान व इलेक्ट्रॉनिक जैसे विषयों में पाठ्यक्रम संचालित होते हैं। यद्यपि समय-समय पर महाविद्यालय अपने पूर्व छात्रों को भी आमंत्रित करता रहा है। वर्ष 2010 में महाविद्यालय अपनी

स्वर्णजयंती के आयोजन के समय भी अपने पूर्व छात्रों को ससम्मान आमंत्रित किया था।

महाविद्यालय के पूर्व छात्र प्रशासन , विज्ञान अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी, राजनीति, उच्च शिक्षा, विद्यालयीन शिक्षा, व्यापार ,व्यवसाय उद्योग, एवं अनेकानेक पदों को सुशोभित कर रहे हैं ,जो न सिर्फ हमारे देश में बल्कि विदेशों में भी ये कार्यरत हैं।

महाविद्यालय अपने पूर्व छात्रों के लिए पूर्व छात्र सम्मेलन(एल्यूमिनी मीट) का आयोजन कर पूर्व छात्रों को एक प्लेटफार्म प्रदान करना चाहता है ताकि उनके छात्र जहां कहीं भी हैं अपने संस्था में उपस्थित होकर अपनी पुरानी यादें ताजा करें। बदलती परिस्थितियों में संस्था के विकास के विभिन्न आयामों को समझते हुए उसमें यथासंभव अपना योगदान दें। उनके विचार आज के परिपेक्ष्य में इस संस्था को मजबूती प्रदान करेगी।

इसे ध्यान में रखते हुए राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अंबिकापुर अपने पूर्व छात्रों की एक महत्वपूर्ण बैठक 2 मार्च 2024 को अपराह्न 1.30 बजे रखी है। महाविद्यालय प्रशासन की मंशा है की बृहद स्तर पर एल्यूमनी मीट के आयोजन की रूपरेखा बनाई जाए तथा इसकी संभावित तिथियों पर विचार किया जाए। इस बैठक के संबंध में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ रिजवान उल्ला ने कहा है की महाविद्यालय के पूर्व छात्र अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर बैठक में अपने महत्वपूर्ण विचार रखकर आगामी आयोजन की रूपरेखा तैयार करने में सहयोग प्रदान करें।

मुसीबत से खुद को बचाने के लिए लड़कियों को अपनी मर्यादा व दायरे को समझने की जरूरत

- संवाददाता -
अंबिकापुर, 28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

जीवन अनमोल है के थीम पर छोटे बच्चों द्वारा किए जा रहे आत्महत्या के रोकथाम के लिए जन जागरुकता कार्यक्रम गर्ल्स स्कूल में विजन समाजसेवी संस्था द्वारा चलाया गया। इस दौरान जनप्रतिनिधि एवं समाजसेवक ठाकुर राम राजवाड़े बच्चों से कहा कि अपनी समस्याओं को बताने में अब डरने की जरुरत नहीं है आप सभी बेहिचक होकर अपनी परेशानियों को बता सकते हैं। महिला थाने की प्रभारी दुर्गेश्वरी चौबे ने कहा कि बच्चियों की संवेदनशीलता बच्चों के मुकाबले ज्यादा होती है। इसलिए लड़कियों को ज्यादा संभाल के रहने की जरूरत है और उन्हें अपनी मर्यादा व दायरे को समझने की भी जरूरत है ताकि वे आगे आने वाले मुसीबत से खुद को बचा सकें। इस दौरान विजन समाजसेवी संस्था की डायरेक्टर शिल्पा पांडेय ने बताया कि जीवन अनमोल है की थीम पर विभिन्न स्कूलों और कॉलेज में आत्महत्या विरोधी जन जागरूकता का कार्यक्रम हम सभी द्वारा किया जा रहा है। इसका उद्देश्य बालक व बालिकाओं में यह विश्वास पैदा करना है कि वह अकेले नहीं है विजन जैसी कई संस्थाएं उनके साथ हैं जो समस्या में अपने टीचर्स को या घर में नहीं बता सकते वह समाज सेवी संस्था तक सीधे बता सकते हैं। जिससे समाज से भी संस्था वाले उनके काउंसलिंग कर उन्हें उसे निराशा या अवसाद से बाहर निकलने में मदद करें। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन गर्ल्स स्कूल के प्राचार्य आरएल मिश्रा द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से बच्चों में एक आशा और उम्मीद का संचार होता है तथा जीवन जीने की नई प्रेरणा मिलती मिलती है। कार्यक्रम में शशि कला, प्रियंका चौबे, शिव कुमारी,, आसन बेगम, नूरेसा खातून, ज्ञान लता कुजूर, तारामणि, श्वेता सिंह, जितेंद्र कुमार पांडेय के अलावा छात्राएं उपस्थित थे।

CMYK

पाकिस्तान चुनाव में धांधली के मिले और सबूत, नेताओं के ऑडियो वायरल,बोले-हमारा जनादेश फर्जी

इस्लामाबाद,28 फरवरी 2024। पाकिस्तान में बीते दिनों हुए आम चुनाव में इमरान खान की पार्टी पीटीआई धांधली के गंभीर आरोप लगा रही है। बीते दिनों पाकिस्तान के एक पूर्व अधिकारी ने भी पीटीआई के दावों को सही ठहराते हुए चौंकाने वाले खुलासे किए थे। अब एक बार फिर ऐसे सबूत मिले हैं, जिनसे पाकिस्तान के चुनाव में धांधली के दावों की पुष्टि होती है। दरअसल पाकिस्तान के दो नेताओं की ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं, जिनमें दावा किया जा रहा है कि पाकिस्तान के चुनाव में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है और जनादेश की चोरी हुई।

एमक्यूएम नेता की ऑडियो लीक

पाकिस्तानी की राजनीतिक पार्टी मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट-पाकिस्तान (एमक्यूएम-पी) के नेता और सिंध गवर्नर कामरान तेसोरी का ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस ऑडियो में तेसोरी कहते सुनाई दे रहे हैं कि वे कहते हैं कि हमारा जनादेश पूरी तरह से फर्जी है। दरअसल तेसोरी फोन पर किसी से बात कर रहे थे। वायरल ऑडियो में तेसोरी कहते हैं कि आज (8 फरवरी) हमें वोट नहीं मिले। अगर एमक्यूएम-पी ने शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार में शामिल होने का फैसला किया तो पार्टी के हालात बहुत बुरे होंगे। हमें एक मंत्री पद मिल रहा है और गवर्नर पद भी लेने की बात कही जा रही है और सबसे बुरा ये है कि हम मतदाताओं का विश्वास खो चुके हैं।

पीटीआई ने एमक्यूएम-पी की जीत को बताया फर्जी

एमक्यूएम-पी के ही वरिष्ठ नेता मुस्तफा कमाल का भी एक ऑडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वे कह रहे हैं कि उनकी पार्टी के विरोधी दावा कर रहे हैं कि उनका जनादेश फर्जी है। पीटीआई भी ऐसा ही दावा कर रही है। एमक्यूएम-पी को नेशनल असेंबली में 17 सीटें मिली हैं। पीटीआई का दावा है कि एमक्यूएम-पी के उम्मीदवारों को चुनाव में तीसरा स्थान भी नहीं मिला था। पीटीआई समर्थित उम्मीदवारों को 92 नेशनल असेंबली सीटों और पंजाब असेंबली में 100 सीटों पर जीत मिली है। वहीं नवाज शरीफ की पार्टी पीएमएल-एन को नेशनल असेंबली में 75 और पीपीपी को 54 सीटें मिली हैं। पीटीआई का दावा है कि अगर चुनाव में धांधली न हुई होती तो उन्हें नेशनल असेंबली में 180 और प्रांतीय असेंबली में 220 सीटें मिलतीं।

पाकिस्तान में पीएमएल-एन, पीपीपी, एमक्यूएम-पी समेत कई निर्दलीय उम्मीदवारों के साथ मिलकर गठबंधन सरकार बनाने का एलान किया है। शहबाज शरीफ नई सरकार में प्रधानमंत्री पद संभालेंगे। वहीं आसिफ अली जरदारी राष्ट्रपति उम्मीदवार होंगे। हालांकि अभी तक शपथ ग्रहण समारोह की तारीख का एलान नहीं किया गया है। गठबंधन की सहयोगी पीपीपी खुद एमक्यूएम-पी की जीत पर सवाल उठा रही है।

सैन्य कर्मियों के भारत लौटने से पहले तकनीकी टीम पहुंची मालदीव, विमानन प्लेटफॉर्म का संचालन संभालेगी

माले,28 फरवरी 2024। सैन्य कर्मियों के पहले बैच के 10 मार्च तक मालदीव छोड़ने से पहले भारतीय तकनीकी कर्मियों की पहली टीम द्वीप राष्ट्र पहुंच गई है। मालदीव के रक्षा मंत्रालय ने इसकी जानकारी दी है।

मालदीव के रक्षा मंत्रालय ने बताया, भारतीय नागरिकों की पहली टीम पहुंच गई है। अब वे अड्डू में हेलीकॉप्टर का संचालन संभालेंगे। अड्डू में तैनात भारतीय सैन्य कर्मी दोनों देशों की सरकारों की सहमति से 10 मार्च तक वापस भारत लौट आएंगे।÷ बयान में बताया गया कि बुधवार तक भारत से एक रिप्लेसमेंट हेलीकॉप्टर भी आ जाएगा, जिसके बाद नागरिक टीम इसके संचालन को संभालने के लिए प्रशिक्षण अभ्यास शुरू कर देगी।

बता दें कि दो फरवरी को दोनों देशों ने सहमति जताई थी कि भारत अपने सैन्यकर्मियों को मार्च और मई के बीच मालदीव से वापस बुला लेगा। वहीं आठ फरवरी को विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने बताया कि वर्तमान कर्मियों को भारतीय तकनीकी कर्मियों द्वारा रिप्लेस किया जाएगा। वे मालदीव में दो हेलीकॉप्टर और एक डोर्नियर विमान का संचालन जारी रखेंगे।

दोनों देशों के बीच हुई थी चर्चा

मालदीव ने एक बयान जारी कर दावा किया था कि दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए हैं कि तीन विमानन प्लेटफार्मों में से एक में भारत सैन्य कर्मियों को 10 मार्च तक और अन्य को 10 मई तक बदल देगा। हालांकि, भारत ने सैनिकों को वापस लेने का कोई उल्लेख नहीं किया था। भारत की ओर से कहा गया, ÷बैठक के दौरान, दोनों पक्षों ने साझेदारी को बढ़ाने के लिए कदमों की पहचान करने की दिशा में द्विपक्षीय सहयोग से संबंधित व्यापक मुद्दों पर अपनी चर्चा जारी रखी। विदेश मंत्रालय ने कहा, दोनों पक्ष भारतीय विमानन मंचों के निरंतर परिचालन के लिए परस्पर व्यावहारिक समाधान पर भी सहमत हुए जो मालदीव के लोगों को मानवीय और चिकित्सकीय सेवाएं मुहैया कराते हैं।

लंदन की कोर्ट से प्रिंस हैरी को झटका,सुरक्षा को लेकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मुकदमा हारे

लंदन,28 फरवरी 2024। ब्रिटेन के प्रिंस हैरी को लंदन हाईकोर्ट से झटका लगा है। ब्रिटेन में अपनी सुरक्षा को लेकर उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ अदालत का रुख किया था। मामले में सुनवाई के दौरान न्यायाधीश सर पीटर लेन ने कहा कि पुलिस सुरक्षा हटाने का फैसला गैरकानूनी या तर्कहीन नहीं था

कौन हैं प्रिंस हैरी

किंग चार्ल्स III के 39 वर्षीय छोटे बेटे प्रिंस हैरी अपने परिवार के साथ अमेरिका में स्थानांतरित हो गए थे। उन्होंने तर्क दिया था कि उनके सुरक्षा स्तर को बदलने के सरकार के फैसले में उनके साथ गलत व्यवहार किया गया था। उनके वकीलों ने अदालत को बताया कि जब वह अपने देश में हैं तो उनकी सुरक्षा के लिए इस तरह का दृष्टिकोण अपनाना ठीक नहीं था।

क्या है मामला

मामला फरवरी 2020 का है, जिसमें रॉयल्टी और सार्वजनिक हस्तियों की सुरक्षा के लिए कार्यकारी समिति (आरएवीईसी) के एक फैसले के बाद ब्रिटेन होम ऑफिस द्वारा प्रिंस हैरी की सुरक्षा की समीक्षा की गई थी। पिछले साल, प्रिंस हैरी ब्रिटेन की यात्रा के दौरान पुलिस सुरक्षा के लिए निजी भुगतान करने का मुकदमा भी हार गए थे।

इस देश में गहराया जनसंख्या संकट,साल 2023 में पैदा हुए सिर्फ 30,500 बच्चे,सरकार ने जताई चिंता

सिंगापुर,28 फरवरी 2024। भारत में जहां बढ़ती जनसंख्या चिंता का विषय बनी हुई है, वहीं कुछ देश ऐसे भी हैं, जो घटती जनसंख्या से परेशान हैं। सिंगापुर भी अपनी घटती जनसंख्या से परेशान है। सिंगापुर की सरकार ने बुधवार को जानकारी देते हुए बताया कि उनके देश में कुल प्रजनन दर एक प्रतिशत से भी कम होकर 0.97 प्रतिशत हो गई है। यह सिंगापुर के इतिहास में सबसे निचले स्तर पर हैं। कुल प्रजनन दर, बच्चों की वह औसत संख्या है, जो एक महिला अपने प्रजनन काल के दौरान पैदा करती है।

साल दर साल आ रही गिरावट

सिंगापुर के प्रधानमंत्री कार्यालय की मंत्री इंद्राणी राजाह ने बुधवार को सिंगापुर की पार्लियामेंट को यह जानकारी दी। सिंगापुर मीडिया की रिपोर्ट्स के अनुसार, सिंगापुर में जन्म दर भी औसत 2.1 प्रतिशत से कम हो गई है। इन आंकड़ों के साथ ही सिंगापुर उन देशों में शामिल हो गया है, जिनमें जनसंख्या खतरनाक स्तर पर कम हो रही है। अभी दक्षिण कोरिया में प्रजनन दर दुनिया में सबसे कम यानी 0.72 प्रतिशत है। सिंगापुर सरकार ने बताया कि साल 2021 में प्रजनन दर 1.12 प्रतिशत थी, जो कि 2022 में कम होकर 1.04 प्रतिशत हो गई। अब 2023 में ये आंकड़ा और गिरकर 0.97 प्रतिशत हो गई है।

बूढ़ी हो रही सिंगापुर की जनसंख्या

सिंगापुर सरकार ने बताया कि साल 2023 में देश में 26,500 शादियां हुईं और 30,500 बच्चे पैदा हुए। सिंगापुर इन दिनों जनसंख्या के मोर्चे पर दोहरे संकट से जूझ रहा है। जहां एक तरफ सिंगापुर में जन्म दर और प्रजनन दर तेजी से नीचे गिर रही है और ज्यादा बच्चे पैदा नहीं हो रहे, वहीं दूसरी तरफ सिंगापुर की आबादी बूढ़ी हो रही है। ऐसा ही रहा तो आने वाले कुछ वर्षों बाद सिंगापुर में काम करने वाले लोगों की कमी हो सकती है, जिसका असर सिंगापुर की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा।

गाजा में फिलिस्तीनी मृतकों की संख्या बढ़कर हुई 29,782

गाजा, 28 फरवरी 2024। गाजा पट्टी में इजरायली हमलों में मरने वाले फिलीस्तीनियों की संख्या बढ़कर 29,782 हो गई है। हमास द्वारा संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह जानकारी दी। विज्ञप्ति के अनुसार पिछले 24 घंटों के दौरान इजरायली सेना ने 90 फिलिस्तीनियों को मार डाला और 164 अन्य को घायल कर दिया, जिससे मरने वालों की कुल संख्या 29,782 हो गई और घायलों की संख्या 70,043 हो गई।विज्ञप्ति में कहा गया है कि कुछ पीड़ित मलबे के नीचे और सड़कों पर फंसे हुए हैं। इजरायली सेना एम्बुलेंस और नागरिक सुरक्षा टीमों की पहुंच में बाधा डाल रही है। सोमवार को अन्य बयान में इजरायली सेना ने पुष्टि की कि गाजा पट्टी में उसके पांच सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गए हैं।

राष्ट्रपति दावेदारी के लिए डेमोक्रेट नेताओं की पसंद बनीं मिशेल ओबामा,बाइडन को मिल सकती है चुनौती

वॉशिंगटन,28 फरवरी 2024। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की पत्नी मिशेल ओबामा राष्ट्रपति चुनाव के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार जो बाइडन की जगह लेने के लिए प्रमुख पसंद बन चुकी है। रासमुसेन रिपोर्ट पोल्स में मतदान करने वाले डेमोक्रेटिक पार्टी के करीबन आधे नेताओं ने राष्ट्रपति चुनाव के लिए बाइडन के अलावा किसी अन्य पर अपनी पसंद व्यक्त की है।

राष्ट्रपति चुनाव के लिए डेमोक्रेटिक नेताओ की प्रमुख पसंद बनी मिशेल ओबामा

करीबन 48 फीसदी ने नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव से पहले बाइडन के अलावा अन्य उम्मीदवार को चुनने के लिए सहमति जताई है, जबकि 38 फीसदी ने इसपर असहमति जताई है। केवल 33 फीसदी ने मतदान में फेरबदल का अनुमान लगाया है। 81 वर्षीय जो बाइडन की जगह लेने के लिए मिशेल ओवामा को 20 फीसदी वोट मिले।

इस दौड़ में अन्य दावेदार उप राष्ट्रपति कमला हैरिस, पूर्व विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन, कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसम और मिशिगन के गवर्नर ग्रेचेन व्हिटमर शामिल हैं। कमला हैरिस को जहां 15 फीसदी तो वहीं हिलेरी क्लिंटन और डोनाल्ड ट्रंप को 15 फीसदी वोट मिले।

मिशेल ओबामा ने व्यक्त की चिंताएं

बता दें कि मिशेल ओबामा को बार बार राष्ट्रपति चुनाव लड़ने पर विचार करने के लिए बुलाया जा रहा है। इससे पहले ओबामा ने आगामी चुनाव को लेकर अपनी चिंताएं व्यक्त की थी। उन्होंने कहा, लोग सोचते हैं कि सरकार वास्तव में कुछ करती है? और मै कहती हूं कि क्या सरकार हमारे लिए सबकुछ करती है। हम इस लोकतंत्र को हल्के में नहीं ले सकते हैं। मुझे कभी कभी चिंता होती है कि हम ऐसा करते हैं। 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रपति जो बाइडन और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच दोबारा मुकाबला होने की उम्मीद है। बाइडन ने इस दौरान खुद को सबसे योग्य उम्मीदवार होने का दावा किया है। वहीं ट्रंप ने स्पष्ट किया कि वे चुनाव से पहले संभावित आपराधिक दोषसिद्धि के बावजूद चुनाव लड़ेंगे।

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में खाई में गिरी यात्रियों से भरी बस,कम से कम 10 की मौत

इस्लामाबाद,28 फरवरी 2024। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में मंगलवार देर रात यात्रियों से भरी एक बस गहरी खाई में गिर गई। इस घटना में कम से कम 10 लोगों के मारे जाने की खबर है। वहीं, 15 से अधिक लोग घायल हुए हैं। पुलिस ने बताया कि बस काफी तेजी से चल रही थी। इसी दौरान एक मोड़ पर ड्राइवर ने नियंत्रण खो दिया और बस खाई में गिर गई।

बताया गया है कि यह बस हरिपुर जिले में खानपुर के पहाड़ी गांव की तरफ जा रही थी। रास्ते में तरनावा में यह हादसे का शिकार हो गई। मृतकों में पुरुष, महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। बस के खाई में गिरने की खबर मिलते ही राहत-बचाव दलों को घटनास्थल पर रवाना किया गया। घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

श्रीराम लला दर्शन का जिले वासियों को मिलेगा लाभ,इच्छुक भक्त कर रहे हैं आवेदन

प्रथम चरण में 55 वर्ष अथवा उससे अधिक उम्र के व्यक्तियों को प्राथमिकता

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ सरकार के बहुप्रतीक्षित श्रीरामलला दर्शन (अयोध्या धाम) योजना का लाभ लेने के लिए स्थानीय निवासियों द्वारा आवेदन जमा करना शुरू हो गया है। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा स्थानीय निवासियों को अयोध्या धाम यात्रा की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु शासकीय सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से श्रीराम लला दर्शन यात्रा योजना लागू की गई है। रामलला दर्शन योजना में क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा कलेक्टरों को विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। जिले में कलेक्टर विलास भोस्कर के निर्देश पर आवेदन लेने हेतु आवश्यक कार्यवाही शुरू कर दी गई है। अयोध्या धाम जाने हेतु इच्छुक यात्रियों से ग्राम पंचायत तथा नगरीय निकायों में आवेदन लिए जा रहे हैं। आवेदन स्पष्ट हिंदी भाषा में ही भरे जाने हैं। प्रथम चरण में 55 वर्ष अथवा उससे अधिक उम्र के व्यक्तियों को प्राथमिकता के साथ चयन किया जाएगा। इस योजना में भाग लेने वाले की न्यूनतम उम्र 18 वर्ष व अधिकतम 75 वर्ष होगा। 75 प्रतिशत हितग्राही ग्रामीण क्षेत्रों से तथा 25 प्रतिशत शहरी क्षेत्र के होंगे।

छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ किरणमयी नायक की अध्यक्षता में 53 प्रकरणों की हुई सुनवाई

» **टर्मिनेट तहसीलदार को अपनी अंतिम भुगतान की राशि से पत्नी को देने होंगे 15 लाख रुपए, भरण पोषण हेतु 5 हजार रुपए प्रतिमाह देने के निर्देश**

- संवाददाता -
अंबिकापुर,28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. किरणमयी नायक एवं सदस्य श्रीमती नीता विश्वकर्मा ने बुधवार को जिला कलेक्टरेट सभाकक्ष अम्बिकापुर में महिला उत्पीड़न से संबंधित प्रकरणों पर सुनवाई की। आयोग की अध्यक्ष डॉ. किरणमयी नायक की अध्यक्षता में आज प्रदेश स्तर की 242वी सुनवाई तथा जिला स्तर में 07वी सुनवाई की गई। सरगुजा, बलरामपुर एवं जशपुर जिले की जनसुनवाई में कुल 53 प्रकरणों में सुनवाई हुई।

सुनवाई के दौरान मानसिक प्रताड़ना के एक प्रकरण में दोनों पक्षों को विस्तार से सुना गया। आवेदिका और अनावेदक क्रमांक 01 लगभग 44 वर्ष पूर्व विवाहित है और दोनो निः संतान है। अनावेदक तहसीलदार के पद से 2007 से टर्मिनेट हो चुके हैं। प्रकरण के फैसले में बकाया भुगतान राशि लगभग 40 लाख रूपये का भुगतान होगा जिसपर आयोग द्वारा निर्देश दिए गए कि इस राशि में से अनावेदक को 15 लाख रूपये आवेदिका को देने होंगे। यदि उससे अधिक राशि मिलती है तो उसमें से एक तिहाई राशि अनावेदक द्वारा आवेदिका को देनी होगी। वर्तमान में अनावेदक को प्रतिमाह 21700 रूपये मासिक पेंशन मिल रही है जिसमें से भरण पोषण हेतु प्रतिमाह 5 हजार रूपये आवेदिका को देगा। जशपुर जिले के इस प्रकरण की प्रतिमाह निगरानी संरक्षण अधिकारी जशपुर के द्वारा किए जाने के निर्देश दिए गए हैं तथा सरगुजा कलेक्ट्रेट में मामला निराकरण होने तक आवेदिका की मदद आयोग की सदस्य श्रीमती नीता विश्वकर्मा द्वारा किया जाएगा। आवश्यकतानुसार कलेक्टर सरगुजा से चर्चा कर तथा आवेदिका का आवेदन दिलाकर अनावेदक को एक मुश्त मिलने वाली राशि आवेदिका को दिलाया जाएगा। प्रकरण एक वर्ष की निगरानी तक देकर प्रकरण नस्तीबद्ध किया गया।

प्रकरणों की सुनवाई के दौरान एक ऐसा प्रकरण सामने आया जिसमें आवेदक ने आयोग को बताया कि उन्होंने अपने लापता बच्चे के डीएनए परीक्षण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया था। आवेदक के संभावित पुत्र की मृत्यु 15 जून 2023 को हो चुकी है और मृतक का अंतिम संस्कार ईसाई धर्म के अनुसार किया गया था, आवेदक बच्चे का अवशेष निकलवाकर डीएनए परीक्षण कराना चाहते हैं। ताकि यह साबित हो सके कि वह आवेदक का पुत्र था। इसके सम्बन्ध में आयोग द्वारा आवश्यक कार्यवाही हेतु जशपुर कलेक्टर को पत्र लिखा गया एवं प्रतिवेदन आयोग को प्रस्तुत करने कहा गया।

क्या अब प्रभारी डीपीएम के बाद सीएमएचओ को सिविल सर्जन का प्रभार दे किया जाएगा पुरस्कृत ?

प्रभारी सीएमएचओ फिर बन सकते हैं जिला चिकित्सालय के सिविल सर्जन,जिला प्रशासन दे सकता है जिला अस्पताल का जिम्माःसूत्र

एक महीने प्रभार में रहते हुए सीएमएचओ ने कर डाली नियम विरूद्ध नियुक्तियां

एक महिने के कार्यकाल की हो जांच

सीएमएचओ डॉ आरएस सेंगर कुछ माह पूर्व एक माह तक जिला अस्पताल के सीएस के प्रभार पर थे, सूत्र बताते है कि इन्होनें 2018 के समय के रूके कई बिलों का भुगतान कर दिया और कई ऐसे लोगों की नियुक्तियां जीवनदीप में कर डाली जिनके परिवार के सदस्य पूर्व से ही जिला अस्पताल में कार्यरत है। नियुक्ति में किसी भी तरह का विज्ञापन जारी नहीं किया गया। यह भी बताया जा रहा है लगभग 12 से 15 नामों की सूची और तैयार है बस वो प्रभार के इंतजार में है यदि उन्हें प्रभार मिला और उनकी नियुक्ति भी वो तुरंत कर देगें। उनके एक माह के कार्यकाल की जांच की षिकायत भी हुई है परन्तु अब तक मामले की जांच शुरू नही हो सकी है।

-रवि सिंह-
बैकुण्ठपुर,28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले के जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डॉ ए के करन 29 फरवरी को सेवानिवृत्त हो रहे हैं,उनके सेवानिवृत्त होने के बाद एक बार फिर जिला प्रशासन कई भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरे हुए वर्तमान सीएमएचओ डॉ आरएस सेंगर को प्रभार देने की तैयारी में है। जबकि एक माह के चार्ज में रहते सीएमएचओ ने जीवनदीप समिति में बिना विज्ञापन कई चहेतों की नियुक्तियां कर डाली थी, जिला प्रषासन के खास बने हुए प्रभारी डीपीएम के एकदम खास बने सीएमएचओ पर शिकायत के बाद भी किसी तरह की कार्यवाही नहीं की गई है। कोरिया जिले की स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह से लडखड़ाई हुई है। एक मात्र जिला अस्पतल बैकुंठपुर में सीएमएचओं और प्रभारी डीपीएम को लेकर चिकित्सको ने मोर्चा खोला हुआ है ऐसे में वर्तमान सीएस डॉ ए के करन 29 फरवरी को सेवानिवृत्त होने वाले हैं, सीएस के प्रभार पर सीएमएचओ की नजर काफी समय से गड़ी हुई है जैसा बताया जाता है पूर्व में जब डॉ ए के करन अपना इलाज करवाने बाहर गए थे, तब सीएस का प्रभार सीएमएचओ ने ले लिया था और उनके वापस आने के बाद भी प्रभार नहीं दे रहे थे, जिसके बाद वर्तमान विधायक भइयालाल राजवाडे ने स्वास्थ्य संचालक से बात की थी स्वास्थ्य संचालक की फटकार के बाद सीएमएचओ ने सीएस का प्रभार तो डॉ ए के करन को सौप दिया था, वहीं इसके तुरंत बाद कलेक्टर कोरिया से जीवन दीप समिति की जांच शुरू करवा दी, पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर कराई जा रही जांच पर सरकार के आला अधिकारियों के साथ जनप्रतिनिधियों ने हैरानी जताई थी और जांच आई गयी हो गयी, परन्तु जिला अस्पताल की कुर्सी पर सीएमएचओ नजर गडाए हुए हैं कांग्रेस सरकार से पदस्थ सीएमएचओ खुद को आरएसएस का करीबी बताकर अब भाजपाई बन गए हैं बताया जा रहा है कि उन्हें जिला अस्पताल का प्रभार फिर सौंपे जाने के लिए जिला प्रषासन तैयारी कर रहा है।

भ्रष्टाचार की लगातार इबारत लिखने वाले सीएमएचओ पर जिला प्रशासन है मेहरबानःसूत्र

कोरिया जिले में डॉक्टर एस एल चावड़ा के बाद कोई भी ऐसा सीएमएचओ नहीं देखने को मिला जो स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को लेकर जिम्मेदारियों का निर्वहन करता रहा हो। कोरोना महामारी का काल कहें या फिर कांग्रेस शासनकाल का काल कोरिया जिले का स्वास्थ्य विभाग भ्रष्टाचार की नई नई इबारत लिखता रहा जिससे जिले की स्वास्थ्य व्यवस्था बेपटरी होती रही। जिला चिकित्सालय साथ ही जिले की स्वास्थ्य व्यवस्था जहां बद से बदतर होती रही वहीं स्वास्थ्य विभाग में जिम्मेदारी निभा रहे जिम्मेदार मालदार होते रहे। कोरोना काल की एन एच एम की भर्तियां जिनमे जमकर भ्रष्टाचार हुआ,खरीदी जो होती रहीं जिनमे जमकर भ्रष्टाचार होता रहा वहीं स्वास्थ्य सुविधाओं का बुरा हाल लगातार देखा जाता रहा। आज जिले में स्वास्थ्य सुविधा का हाल यह है की कोई भी ऑपरेशन छोटा हो या बड़ा जिला चिकित्सालय में तभी संभव हो पाता है जब स्थिति ऐसी होती है जब मरीज को कहीं भेजने से विलंब की बात सामने आती है वरना जिला चिकित्सालय में पदस्थ चिकित्सक भी निजी नर्सिंग होम में जाकर ऑपरेशन कर रहे हैं और मरीजों से शुल्क ले रहे हैं। कुल मिलाकर जिला चिकित्सालय यह तय मात्र कर रहा है की किसका इलाज किस निजी चिकित्सालय में होगा कौन सा ऑपरेशन किस अस्पताल निजी में होगा। स्वास्थ्य व्यवस्था का यह बुरा हाल सीएमएचओ की लापरवाही साथ ही उनकी भ्रष्टाचार में ही संलिप्त रहने के कारण है यह कहना गलत नहीं होगा।

क्या स्वास्थ्य विभाग के इस खेल में मंत्री की छवि धूमिल हो रही है जिसकी किसी को चिंता नहीं ?

ज्ञात हो की प्रभारी डीपीएम डॉ. प्रिंस जयसवाल को पद से पृथक कर उसके खिलाफ जांच होनी थी पर जांच ना कर उसे फिर प्रभारी डीपीएम बनाकर सूरजपुर भेज कर उसे पुरस्कृत किया ही माना जा रहा है जिसके विरुद्ध जांच करनी थी उसे पर दया दृष्टि दिखाते हुए कोरिया से भी बड़े जिले का डीपीएम प्रभारी बना दिया गया, वही जो पहले से डीपीएम बनाकर भेजे गए थे वह आज भी अपना प्रभार के लिए भटक रहे हैं अब ऐसे में सवाल यह उठता है कि उसे आदेश का क्या होगा जो पहले कोरिया जिले के लिए डीपीएम बनकर जिन्हें भेजा गया था? स्वास्थ्य विभाग में क्या खेल चल रहा है यह किसी से छुपा नहीं पर कहीं न कहीं स्वास्थ्य विभाग के इस खेल में मंत्री की छवि धूमिल हो रही है जिसकी किसी को चिंता नहीं, अब सूत्रों की माने तो एक और स्वास्थ्य विभाग का अधिकारी पुरस्कृत हो सकता है सीएमएचओ के साथ सिविल सर्जन भी उसे बनाया जा सकता है जिसकी तैयारी लगभग तय है बस आदेश निकलने का इंतजार है।

कोई भी चिकित्सक नहीं करता है सीएमएचओ से बात

सीएमएचओ और प्रभारी डीपीएम के खिलाफ जिला अस्पताल बैकुंठपुर के सभी चिकित्सकों ने स्वास्थ्य मंत्री को हटाए जाने का पत्र भेजा था, जिसमें 27 से ज्यादा चिकित्सकों के हस्ताक्षर थे, चिकित्सकों को समझाईशदेने के लिए जिला प्रशासन ने सभी की बैठक भी बुलाई थी, परन्तु चिकित्सकों ने सीएमएचओ और प्रभारी डीपीएम को लेकर किसी भी प्रकार की बात नहीं मानी है, और दोनों के बीच तकरार अब तक बरकरार है। तय है कि यदि सीएमएचओ को सीएस का प्रभार मिलता है और इसका नुकसान भोली भाली जनता को उठाना पड सकता है। चिकित्सकों के साथ सीएमएचओं के अच्छे रिष्तों होने के बाद ही जिला अस्पताल का सही संचालन हो पाएगा। जबकि दोनों को प्रश्रय देने वाले जिला प्रषासन को जनता के हितों से कोई लेना देना नही रहा है यह लगने लगा है और इसीलिए वर्तमान में जिला चिकित्सालय का हाल बेहाल है।

क्या ताकतवर प्रभारी डीपीएम स्वास्थ्य विभाग कोरिया को प्रभारी सीएमएचओ कोरिया कर पाएंगे सूरजपुर के लिए रिलीव ?

आचार संहिता का बस कर रहे इंतजार,दिखावे के लिए जारी हुआ है स्थानांतरण आदेशःसूत्र

सुरजपुर डीपीएम वहां से रिलीव होंगे और न कोरिया से आयुर्वेदिक चिकित्सक प्रिंस जायसवाल रिलीव किए जाएंगेःसूत्र

-रवि सिंह-
बैकुण्ठपुर/ सूरजपुर 28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

प्रभारी डीपीएम स्वास्थ्य विभाग कोरिया डॉ प्रिंस जायसवाल को सुरजपुर में काम करने के लिए राज्य सरकार ने निर्देशित किया है, पर राज्य सरकार के आदेशों को धता बताने वाले सीएमएचओ जिला कोरिया ने उसे रिलीव करने से इंकार कर दिया है, आचार संहिता लगने तक मामले को टालने की रणनीति बनाई गई है जैसा सूत्रों का कहना है।जानकारी के अनुसार 23 फरवरी 2024 को एनएचएम के मिशन डायरेक्टर ने दो अलग अलग आदेश के तहत कोरिया के डीपीएम को सुरजपुर और सुरजपुर के डीपीएम को कोरिया में काम करने के लिए निर्देशित किया है। वही बेहद मीठे सीएमएचओ ने उन्हें रिलीव न करने की रणनीति बनाई है, सूत्रों की माने तो रिलीव न करने की रणनीति ये बनाई गई है कि न तो सुरजपुर वाले डीपीएम वहां से रिलीव होंगे और न कोरिया से आयुर्वेदिक चिकित्सक प्रिंस जायसवाल रिलीव किए जाएंगे, लोकसभा चुनाव के लिए लगने वाली आचार संहिता तक कोरिया जिले के सीएमएचओ प्रभारी डीपीएम का रिलीविंग टालेंगे ताकि आचार संहिता लग जाये उसके बाद उन्हें नही भेजा जाएगा।

घटती घटना | अम्बिकापुर,मंगलवार 27 फरवरी 2024 | 5
घटती-घटना की खबर का असर कहें या खबर के बाद का इनाम कहें
कोरिया से हटाकर प्रभारी डीपीएम को बनाया गया सूरजपुर का प्रभारी डीपीएम ?
NOTICE

टीएल में रिलीव करने पर काट रहे कन्नी

हर कोई जानता है कि प्रभारी डीपीएम जिला प्रशासन के सबसे खास रहे है जिला प्रशासन का वह दुलारा है, तमाम शिकायत और लगातार जिला प्रशासन की हो रही किरकिरी के बाद जब सीएमएचओ से पूछा कि कब रिलीव कर रहे हो तो सीएमएचओ ने रिलीव करने से कन्नी काटते हुए कहा कि सुरजपुर से रिलीव होगा तो हम करेंगे। मतलब साफ है सीएमएचओ जानबूझकर राज्य सरकार के आदेशों की धज्जियां उड़ा रहे है। कुल मिलाकर यह आदेश दिखावटी है और डीपीएम कोरिया जिले से नहीं जाने वाले जायेगें भी तो वह एमसीबी ही जायेंगे तब तक वह कोरिया जिले में ही स्वास्थ्य व्यवस्था को और बर्बाद करने का काम करते रहेंगे।

अनियमितताओ में शामिल हैं सीएमएचओ

बेहद मीठे सीएमएचओ डॉ आरएस सेंगर ने स्वास्थ्य विभाग की काफी किरकिरी करा रखी है, उनकी जिले के किसी भी चिकित्सक से नही बन रही है उनके खिलाफ सारे चिकित्सको ने उन्हें हटाने के लिए पत्र लिख रखा है, अभी तक डीपीएम की आड़ में उन्होंने जमकर अनियमितता बरती है, सूत्र यह भी बताते है किराए पर चलने वाले वाहनों का भी उनके द्वारा जमकर दुरुपयोग किया जा रहा है। स्वास्थ्य में हो रहे बड़े भ्रष्टाचार के पीछे सीएमएचओ की बड़ी भूमिका है। अब डीपीएम का स्थानांतरण आदेश आने के बाद वो किसी भी कीमत पर उन्हें छोड़ना नही चाहते है भेजना नहीं चाहते। इसीलिए डीपीएम को रिलीव करने के लिए वो खास रणनीति पर काम करना शुरू कर दिए है।

सरकार के आदेशों को नही मानते सीएमएचओ

एक साल पहले कलेक्टर द्वारा बनाये गए प्रभारी डीपीएम के स्थान पर सरकार ने आदेश जारी कर नए डीपीएम की नियुक्ति की थी परंतु सीएमएचओ ने सरकार के आदेश को ही गलत साबित करते हुए डीपीएम को जॉइन नही करने दिया। उन्होंने नियमों का हवाला देकर नए आए डीपीएम को चार्ज ही नहीं लेने दिया और डॉक्टर प्रिंस जायसवाल ही डीपीएम बने रहे। कोरिया जिले में स्वास्थ्य विभाग में किस तरह दोनो मिलकर अपनी मनमानी कर रहे हैं इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है की दोनो एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ना नहीं चाहते।

ग्राम सिरौली में संस्कृत कार्यक्रम का हुआ आयोजन

मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्र की विधायक रेणुका सिंह रही उपस्थित

-संवाददाता-
मनेन्द्रगढ़,28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

मनेन्द्रगढ़ जिला एमसीबी संस्कृति कार्यक्रम सेवा समिति ग्राम सिरौली, क्षेत्र 25 फरवरी को आयोजित किया गया के अनगिनत ऐसे युवा है जो अपनी प्रतिभा और कला से अभिभूत है जिनको अपनी हुनर दिखाने के लिए मंच की आवश्यकता पड़ती है। डांस के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखा रहे अनेक कलाकारों को मंच देने का काम कई वर्षो से सांस्कृतिक कार्यक्रम सेवा समिति कर रही है। प्रतिभाओं को मंच देने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम सेवा समिति का यह कार्य काबिले तारीफ है। यह बातें पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री व भरतपुर सोनहत विधायक रेणुका सिंह ने ग्राम पंचायत सिरौली में आयोजित डांस प्रतियोगिता को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर पहुंची विधायक रेणुका सिंह ने पूर्व जनपद सदस्य रफीक मेमन की मांग पर सिरौली में सांस्कृतिक भवन निर्माण के लिए अपने विधायक निधि से 15 लाख रुपये देने की घोषणा की। वही आगामी वर्षो में इस आयोजन के लिए हर संभव सहयोग की बात कही, विशेष रूप से आयोजन में, उपस्थित थे सरजू यादव पार्षद एवं नेता प्रतिपक्ष नगर पालिका मनेंद्रगढ़, लखन लाल श्रीवास्तव पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा,प्रदीप वर्मा भाजपा जिला कार्यालय मंत्री, आनंद अग्रवाल अध्यक्ष छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स, संजय राय, धर्म सिंह टेकाम, संजय यादव, अजय मिश्रा जिला शिक्षा अधिकारी एमसीबी सुरेंद्र प्रसाद जायसवाल विकासखंड शिक्षा अधिकारी मनेंद्रगढ़, वीरेंद्र प्रसाद पांडे सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी मनेंद्रगढ़ की उपस्थिति में की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस प्रतियोगिता में एकल में प्रथम स्थान अभिषेक हल्दीबाड़ी चिरमिरी, द्वितीय स्थान आकाश वी आई बिलासपुर,तृतीय स्थान प्रांशु तिवारी शहडोल,समूह में प्रथम स्थान द मर्ज क्रू अंबिकापुर, द्वितीय स्थान द वेपन्स् चरचा, तृतीय स्थान फैशन बॉयज चिरमिरी,जूनियर में प्रथम स्थान अरायना घोष चिरमिरी,द्वितीय स्थान चंकी प्रतापपुर, प्राची अंबिकापुर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डांस प्रतियोगिता के निर्णायक पंकज बेलवंशी इस कार्यक्रम को सांस्कृतिक कार्यक्रम सेवा समिति ग्राम सिरौली के संरक्षक रफीक मेमन अध्यक्ष निर्मल सिंह उपाध्यक्ष राजकुमार वर्मा सचिव मोहम्मद इब्राहिम शह सचिन सचिन सिंह कोषाध्यक्ष अब्दुल शहीद हरि सिंह उप कोषाध्यक्ष अर्जुन सिंह संजय वर्मा कार्यक्रम संयोजक मोहम्मद इसराफिल रफीक खान बबलू घनश्याम प्रसाद केवट एवं सदस्य प्रकाश सिंह पूर्व सरपंच मनेन्द्रगढ़ असलम बाबा मनेन्द्रगढ़ सफीउल्लाह खान अब्दुल शहीद अब्दुल सफीक मयंक उमेश ठाकुर मयंक सिंह सुनील रजक राम अवतार नारायण राजवाड़े दिनेश कुमार सविता भूपत सिंह गुलाब सिंह सुंदर राम केवट धर्मेंद्र सिंह भुवनेश्वर सिंह एवं ग्राम वासियों के सहयोग से संपन्न कराया गया।

सामान्य सभा की बैठक बुलाकर अकारण किया स्थगित,जनपद अध्यक्ष व सदस्यों ने किया विरोध

-संवाददाता-
कोरिया/सोनहत,28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

जनपद पंचायत सोनहत में सामान्य सभा की बैठक आहूत होने के बाद बिना किसी लिखित सूचना के स्थगित किये जाने को लेकर जनपद अध्यक्ष उपाध्यक्ष सभापति व सदस्यों ने घोर आपत्ति जताते हुए नाराजगी जाहिर कर इसका विरोध जताया है, इस सम्बंध में जनपद उपाध्यक्ष गुलाब चौधरी ने घोर आपत्ति जताते हुए सीईओ सोनहत की कार्य प्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि जनपद पंचायत सोनहत की सामान्य सभा की बैठक 28 फरवरी को 12 बजे आहूत की गई थी जिसके बाद अचानक कुछ देर पहले उक्त बैठक को सीईओ सोनहत ने निरस्त कर दिया, श्री चौधरी ने बताया कि सीईओ सोनहत बिल्कुल अपने मनमानी पर उतर आए हैं बैठक बुला कर उसे निरस्त करना न्याय संगत नही है, वही जनपद अध्यक्ष लल्ली सिंह ने भी सीईओ सोनहत पर मनमानी करने का आरोप लगाया और कहा कि जनपद सदस्य बैठक में शामिल होने दूर दूर से आये थे पर बैठक निरस्त होने से शामिल नही हो सके, जबकि जनपद सदस्य मानमती सिंह ने बताया कि विभिन्न आवश्यक मुद्दों पर चर्चा के लिए सामान्य सभा की बैठक आहूत की गई थी लेकिन अचानक निरस्त होने से आम जनता का नुकसान होगा, आने वाले समय मे अचार संहिता लगने की संभावना है इस लिहाज से यह बैठक जरूरी थी, जनहित से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा कर जनता को लाभ मिले इस लिए सामान्य सभा की बैठक होती है लेकिन बिना लिखित सूचना उसे निरस्त करना निंदनीय है, सभापति कृष्ण कुमार राजवाड़े सहित प्रकाश पैकरा ने भी बैठक निरस्त करने की घोर निंदा करते हुए इसे गलत ठहराया।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी रा., वाड्रफनगर जिला बलरामपुर-रामानुजगंज (छ0ग0)

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण जनता ग्राम पंचायत रमेशपुर तहसील रघुनाथनगर जिला बलरामपुर-रामानुजगंज छ0ग0 को ईश्तहार के जरिये सूचित किया जाता है कि आवेदक राजेन्द्र आ0 लालजी जाति कलार निवासी ग्राम रमेशपुर तहसील रघुनाथनगर जिला बलरामपुर-रामानुजगंज छ0ग0 द्वारा ग्राम रमेशपुर तहसील रघुनाथनगर स्थित अपने अधिपत्य एवं स्वामित्व की भूमि ख0न0 282 रकबा 0.50 हे0 मे से रकबा 0.04 हे0 भूमि को कृषि प्रयोजन से भिन्न आवासीय प्रयोजनार्थ व्यपवर्तित कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः इस संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति हो तो दिनांक 28/02/2024 तक इस न्यायालय में लिखित आवेदन पत्र प्रस्तुत कर सकते है। समय-सीमा के बाद के आवेदन पत्र पर विचार नहीं किया जावेगा।

(सील) अनुविभागीय अधिकारी (रा.) वाड्रफनगर जिला बलरामपुर-रामानुजगंज

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा (छ0ग0)

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक घुरन राम राजनाथ निवासी रूखपुर थाना गांधीनगर तहसील अम्बिकापुर ने कराया है कि आवेदक के (नानी) स्व0 भूखली आ0 मृत्यु की दिनांक 28/11/2009 को स्थान निवास में हुई है। आवेदक के मृत्यु उपरांत मृत्यु का पंजीयन नहीं कराया गया है। अतः प्रमाण-पत्र की आवश्यकता होने पर यह आवेदन पेश किया गया है।

उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो ईश्तहार प्रकाशन से 15 दिवस तक न्यायालय में उपस्थित होकर अपना दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। समय-सीमा के बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 09/01/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन मुद्रा से जारी।

(सील) तहसीलदार अम्बिकापुर

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) उदयपुर, जिला-सरगुजा छ.ग.

रा0प्र0क्र0.........................

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदकगण नामिक साय, बागर साय, शिवकुमारी उर्फ राधा सभी पिता धोबसाय निवासी ग्राम कुन्नी द्वारा ग्राम कुन्नी तहसील लखनपुर स्थित संयुक्त खाता की भूमि खसरा नंबर 5, 17, 52, 109, 110, 111, 112, 113, 117, 134, 140, 172, 173, 335, 915, 307, रकबा क्रमशः 0.356, 1.125, 0.129, 0.012, 0.016, 0.077, 0.053, 0.045, 0.206, 0.328, 0.045, 0.308, 0.332 हे0 पर आवेदिका शिवकुमारी का पुकारू नाम राधा दर्ज हो गया है जबकि उसके अन्य दस्तावेजों में वास्तविक नाम शिवकुमारी दर्ज है, अपने वास्तविक दस्तावेज अनुसार राजस्व अभिलेख में अपना नाम सुधार कराने बावत आवेदन इस न्यायालय को प्रस्तुत किया गया है।

उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को यदि कोई आपत्ति हो तो वह स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 21/02/2024 तक इस न्यायालय में उपस्थित होकर अपना दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है नियत अवधि उपरोक्त प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 08/02/2024 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायलयीन पदमुद्रा से जारी किया गया।

(सील) अनुविभागीय अधिकारी रा. उदयपुर, सरगुजा छ0ग0

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर के न्यायालय मे मामला क्रमांक : 202402020700282

विषयः- अ-27 मामले की श्रेणी-राजस्व
सनः- 2023-2024
अम्बिकापुर प.ह.न. 00015 (हे0)
पक्षकारों का विवरण-
आवेदक पक्षकार-शैलेन्द्र कुमार गुप्ता, नरेन्द्र गुप्ता,
अनावेदक पक्षकार- नरेन्द्र गुप्ता, शैलेन्द्र कुमार गुप्ता,

ईश्तहार

आवेदक नरेन्द्र कुमार गुप्ता आ0 उमाशंकर गुप्ता, निवासी जोडा पीपल केदारपुर, अम्बिकापुर, तहसील अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा छ0ग0 के द्वारा ग्राम अम्बिकापुर स्थित खसरा नंबर 4393/5 रकबा 0.046 हे0 भूमि को उभयपक्ष के मध्य में 1/2 अंश में बटवारा किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है, जिसका निराकरण न्यायालय में साक्ष्य लिया जाकर गुण दोष के आधार पर करने हेतु ऑनलाईन ई नामांतरण पंजी से प्रकरण ई कोर्ट में स्थानांतरित किया गया है।

उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 27/03/2024 के पूर्व न्यायालय में स्वंय अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। समय सीमा के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 22/02/2024 को जारी किया जाता है।

(सील) तहसीलदार तहसील-अम्बिकापुर

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खड़गवां में प्रोत्साहन राशि में हुए भ्रष्टाचार की जांच कराएगी भाजपा सरकार

-राजेन्द्र शर्मा-
खड़गवां,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खड़गवां में लिपिक की पदस्थापना होने के बाद भी नेत्र सहायक के द्वारा लिपिक का कार्य किये जाने पर कई सवाल खड़े हो रहे हैं

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खड़गवां में खूब चंद बघेल योजना के प्रोत्साहन राशि में हुए भ्रष्टाचार में इन दोनों खूब सुर्खियां बटोर रहा है। क्षेत्र में जन चर्चा भी है कि जब प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खड़गवां में लिपिक की पदस्थापना है तो प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में पदस्थ नेत्र सहायक से लिपिक का कार्य आखिर क्यों कराया जा रहा है। मगर किसी कर्मचारी में हिम्मत नहीं हैं जो इस नेत्र सहायक चिकित्सक को कुछ बोल सके या विरोध कर सके।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खड़गवां में चलती तो नेत्र सहायक चिकित्सक की ही है चाहे सरकार किसी की भी हो प्रदेश में चाहे किसी की भी सरकार हो मगर खड़गवां प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के नेत्र सहायक चिकित्सक की दबंगई के आगे अन्य कर्मचारी नतमस्तक है। और इस नेत्र सहायक चिकित्सक को कोई यहां से हिला भी नहीं सकता है?

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ नेत्र सहायक चिकित्सक ने अपने नात रिश्तेदार को जीवन दीप समिति के माध्यम से विभिन्न पदों पर पदस्थ कर एवं अपने सगे संबंधियों के नाम पर विभाग में फर्जी बिल का उपयोग कर राशि में हेराफेरी कर एक लिमिटेड कंपनी चलाया जा रहा है। इनके द्वारा प्रोत्साहन राशि में हुए बड़े भ्रष्टाचार में संलिप्त होने की जानकारी मिल रही है इस प्रोत्साहन राशि प्रदान करने में अपने नात रिश्तेदार को भी भारी भरकम राशि का लाभ पहुंचाया गया है ? जबकि इसकी शिकायत आला अधिकारियों से लेकर तात्कालिक कांग्रेस सरकार के स्वास्थ्य मंत्री तक कि गई थी। मगर ऊंची पहुंच के कारण शिकायत की जांच महज एक खानापूर्ति की तरह कर दिया गया ? जिस पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ नेत्र सहायक की कार्य शैली और भ्रष्टाचार के लिए क्षेत्र में चर्चा का बाजार गर्म ? क्या प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खड़गवां में प्रोत्साहन राशि की शिकायत जांच में कि गई लीपापोती की जांच वर्तमान की भाजपा सरकार के द्वारा कराया जाएगा या पूर्व की सरकार की तरह भ्रष्टाचार का कोई नया कारनामे दिखाने के लिए छोड़ दिया जाएगा?

अवैध रेत उत्खनन और ईंट भट्टों पर करे कार्यवाही : कलेक्टर

-संवाददाता-
कोरबा,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

कलेक्टर श्री वसंत ने समय सीमा की बैठक में सभी एसडीएम को निर्देशित किया है कि जिले में कोई भी ईंट भट्ठा अवैध रूप से संचालित न हो। उन्होंने स्वीकृत रेत घाटों के अतिरिक्त होने वाले अवैध रेत उत्खनन पर भी कार्यवाही के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री वसंत ने टीएल के संबंधित पत्र, विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन और अन्य गतिविधियों पर चर्चा की। उन्होंने जिले में होने वाले राखड़ परिवहन पर नजर रखने और नियम विरुद्ध राखड़ परिवहन करने पर संबंधित वाहन पर कार्यवाही के निर्देश एसडीएम, पर्यावरण अधिकारी, परिवहन अधिकारी को निर्देशित किए । कलेक्टर ने विभागों में डीएमएफ अन्तर्गत मांगी गई जानकारी प्रस्तुत करने, निरस्त किये गए कार्यों और अप्रारम्भ कार्यों की राशि जमा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिले में कोई भी स्कूल भवन विहीन न हो और जो भी जर्जर स्कूल हैं उसकी मरम्मत अवश्य कराई जाए। उन्होंने ऐसे स्कूल भवन जो 15 साल से अधिक पुराने हैं और जर्जर हो चुके हैं ऐसे स्कूलों के लिए नए भवन हेतु डीएमएफ के माध्यम से स्वीकृति प्रदान की जा सकती है। जिले में आवश्यकता वाले ऐसे स्कूलों को चिन्हित कर प्रस्ताव उपलब्ध कराएं। उन्होंने स्कूलों, आंगनबाड़ी केंद्रों में विद्युतीकरण, पहुँचमार्ग के लिए आवश्यक निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कोर्ट में स्वास्थ्य विभाग को तंबाकू मुक्त का बोर्ड लगाने, एसडीएम को कटघोरा कोर्ट के सामने अतिक्रमण हटाने सहित अन्य निर्देश भी दिए। इस दौरान कटघोरा डीएफओ श्री कुमार निशांत, जिला पंचायत सीईओ श्री संबित मिश्रा, निगम आयुक्त श्रीमती प्रतिष्ठा ममगाई सहित सभी अधिकारी उपस्थित थे।

मादक पदार्थ का अवैध कारोबार करने वाले युवक को पुलिस ने किया गिरफ्तार

-संवाददाता-
कोरबा,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

पुलिस अधीक्षक कोरबा सिद्धार्थ तिवारी के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नेहा वर्मा के मार्गदर्शन व नगर पुलिस अधीक्षक कोरबा भूषण एक्का के पर्यवेक्षण में जिले में मादक पदार्थ गांजा का कारोबार करने वालों पर लगाम कसने एवं प्रभावी कार्यवाही करने हेतु जिले के समस्त थाना / चौकी प्रभारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया है । इस तारतम्य में दिनांक 27.02.2024 को मुखबिर के माध्यम से पुलिस को सूचना मिली की बुधवारी बाजार कोरबा के पास एक व्यक्ति मादक पदार्थ गांजा का अवैध रूप से बिक्री कर रहा है। उक्त सूचना के संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया एवं वरिष्ठ अधिकारियो से प्राप्त दिशा निर्देश के परिपालन में चौकी प्रभारी सीएसइबी उप निरी. विनोद खाण्डे हमराह स0उ0नि0 महिपाल सिंह आरक्षक देवनारायण कुर्रे के मुखबिर से प्राप्त सूचना की तस्दीक मौके पर जाकर किया गया । जो आरोपी मान सिंह सारथी पिता भगबली सारथी उम्र 52 वर्ष साकिन बुधवारी बाजार कोरबा जिला कोरबा (छ0ग0) द्वारा अवैध रूप से मादक पदार्थ गांजा 01 किलो 500 ग्राम कीमती 15000 रुपये रखकर बिक्री करना पाया गया । जिसे वैधानिक कार्यवाही उपरांत वजह सबूत के मुताबिक जब्ती पत्रक के जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया तथा आरोपी के विरुद्ध धारा 20 बी एन0डी0पी0एस0 एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है। आरोपी को न्यायिक रिमांड पर माननीय न्यायालय पेश किया जायेगा।

पीएम विश्वकर्मा एवं पीएमएफएमई योजनांतर्गत आवश्यक मार्गदर्शन देने हेतु जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

-संवाददाता-
सूरजपुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

प्रधान मंत्री विश्वकर्मा योजना एवं प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना (पीएमएफएमई) के अंतर्गत जिले के हितग्राहियों को उद्योग और सेवा स्थापित करने के संबंध में जानकारी देने हेतु एक जागरूकता कार्यशाला सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जिला पंचायत सूरजपुर के सभाकक्ष में 01 मार्च को प्रातः 10:30 से आयोजन किया जा रहा है। पीएम विश्वकर्मा योजना और सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्योग से संबंधित जानकारी ऑडियो-वीडियो के माध्यम से दिया जाएगा। जिले के एसएचजी सदस्यों, संभावित लाभार्थी, डीआरपी, एलडीएम, बैंकर तथा शिल्पकार एवं कारीगर अधिक से अधिक संख्या में इस जागरूकता कार्यशाला में सम्मिलित होवें ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का अनुसरण करने का अभिनय करते हैं प्रभारी डीपीएम स्वास्थ्य विभाग कोरिया या सच में हैं उनसे प्रेरित ?

अक्सर कई जगहों पर डीपीएम के हाथों में राष्ट्रपिता की तस्वीर वाली किताब या डायरी जरूर नजर आती है

-रवि सिंह-
बैकुण्ठपुर,28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले के स्वास्थ्य विभाग के प्रभारी डीपीएम जिनका हाल ही में तबादला सूरजपुर जिले के लिए हुआ है के हाथों के अक्सर एक किताब या नोट बुक नजर आती है जिसमे उनके हाथों में रहने वाली किताब पर छपी तस्वीर नजर आती है जिसमे राष्ट्रपिता की तस्वीर नजर आती है और उसे देखकर लगता है की वह राष्ट्रपिताा महात्मा गांधी को अनुसरण करते हैं साथ ही वह उनके दिखाए रास्तों पर ही चलकर अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं, वह उनसे प्रेरित हैं और उनकी प्रेरणा हर पल उनके साथ बनी रहे इसलिए ही वह उनकी तस्वीर साथ रखते हैं जो एक किताब कहें या डायरी में छपी हुई है जो अक्सर डीपीएम के हाथों में नजर आती है।

वैसे अब तक डीपीएम की कार्यप्रणाली एक भी ऐसी नहीं नजर आई जिसे देखकर कहा जा सके की वह राष्ट्रपिता के दिखाए रास्ते पर चल रहे हैं क्योंकि राष्ट्रपिता का दिखाया गया रास्ता सत्य एवम अहिंसा का है जिसमे सत्य का मार्ग डीपीएम साहब अपना रहे हैं ऐसा देखने को कभी नहीं मिला। प्रभारी डीपीएम कई मामलों में सुर्खियों में रहे जिनमे स्वास्थ्य विभाग में ही भ्रष्टाचार का मामला सबसे प्रमुख है जिसमे उनके ऊपर कई आरोप लगे यहां तक की कोरोना वैश्विक महामारी के अवसर पर भी उन्होंने जो आपदा का एक दौर था अपने लिए अवसर का दौर बनाया और जमकर भ्रष्टाचार किया। राष्ट्रपिताा के आदर्शों पर चलकर ऐसा वह करते यह कहना सर्वथा अनुचित होगा क्योंकि उनके दिखाए रास्तों पर चलकर शायद ही कोई ऐसा मार्ग चुनेगा जो प्रभारी डीपीएम साहब ने चुना है। कोरिया जिले का स्वास्थ्य विभाग आज जिस स्थिति में है जिस तरह भर्ती से लेकर खरीदी एक एवम वाहन किराए का बिल निकालने में फर्जीवाड़ा हुआ है उसको देखते हुए कतई नहीं कहा जा सकता की ऐसा कोई राष्ट्रपिता का अनुसरण करने वाला कर सकता है। प्रभारी डीपीएम यदि सही मायने में राष्ट्रपिता के दिखाए मार्ग पर चलते उनका अनुसरण करते तो वह जरूर खुद पर लगे आरोपों के लिए जांच की मांग करते और जांच भी विभागीय नहीं उच्च स्तरीय कोई अन्य एजेंसी जो जांच निष्पक्ष करे ऐसी जांच एजेंसी से। वह राष्ट्रपिता से प्रेरित होते तो कतई अपनी बड़ाई खुद से प्रकाशित नहीं कराते जबकि उनके ऊपर लगातार आरोप लगते रहे वहीं वह कभी अपनी बड़ाई खुद ही प्रसारित करते नजर नहीं आते।

महाविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय विज्ञान दिवस कार्यक्रम का हुआ समापन

-संवाददाता-
सूरजपुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

शासकीय रेवती रमण मिश्र महाविद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2024 के अवसर पर तीन दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिवस आज महाविद्यालय में विज्ञान व्याख्यान का आयोजन किया गया। विज्ञान व्याख्यान के लिए डॉ. प्रेम प्रकाश सिंह जीवन विज्ञान संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा, अंबिकापुर द्वारा विद्यार्थियों को डॉ. सी.वी. रमन के द्वारा की गई खोजों के बारे में तथा मानव शरीर में विभिन्न प्रकार के रोगों से संबंधित बनने वाले विभिन्न प्रोटीन की क्रियाविधि को बताया गया। डॉ.पी. पी. सिंह के द्वारा विद्यार्थियों के द्वारा बनाए गए विज्ञान मॉडल का भी अवलोकन किया गया उन्होंने सभी विद्यार्थियों को विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने तथा अपने क्षेत्र के विकास के लिए क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को विज्ञान के द्वारा हल करने के लिए प्रेरित किया। आज के कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ एस एन दुबे द्वारा विद्यार्थियों को विज्ञान से जुड़े रहने के लिए सतत प्रयास करते रहने हेतु प्रेरित उद्बोधन दिया गया। यह कार्यक्रम छत्तीसगढ़ काउंसिल ऑफ साइस एंड टेक्नोलॉजी रायपुर नेशनल काउंसिल ऑफ साइंस एड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन, तथा डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया है। डिपार्टमेंट आफ साइस एड टेक्नोलॉजी नई दिल्ली द्वारा भी विद्यार्थियों को ऑनलाइन कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। सीकास्ट के जनरल डायरेक्टर डॉ. एस. एस. बजाज द्वारा तथा साइंटिस्ट सी डॉ. जे. के राय मैडम के द्वारा विद्यार्थियों को विज्ञान के महत्व के बारे में बताया गया। आज के कार्यक्रम में महाविद्यालय को सभी विद्यार्थी सम्मिलित हुए। उक्त कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए महाविद्यालय के समस्त सहायक प्राध्यापक, अतिथि व्याख्याता एवं कर्मचारियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कलेक्टर एवं एसपी कोरिया के निर्देशानुसार कटगोड़ी,सोनहत व अकलासरई स्कूल के छात्रों ने जाना यातायात नियम

-संवाददाता-
बैकुण्ठपुर,28 फरवरी 2024
(घटती-घटना)।

राज्य सरकार के मंसानुरूप विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों को यातायात नियमों की जानकारी प्रदान किया जाना है जिसके तहत कलेक्टर कोरिया विनय कुमार लंगेह एवं पुलिस अधीक्षक कोरिया सूरज सिंह परिहार के निर्देशानुसार,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती मोनिका ठाकुर, उप पुलिस अधीक्षक श्याम मधुकर के मार्गदर्शन, जिला शिक्षा अधिकारी कोरिया जितेंद्र गुप्ता, डीएमसी समग्र शिक्षा डॉ. संजय सिंह, बीआरसी सोनहत एरोन बखला की पहल पर यातायात पुलिस जागरूकता अभियान को लेकर मंगलवार को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सोनहत व एकलव्य आवासीय विद्यालय सोनहत एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अकलासरई, बुधवार को स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यम विद्यालय कटगोड़ी के छात्रों को लांस नायक महेश मिश्रा द्वारा यातायात नियमों, संकेतों एवं चिन्हों, महिला उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, पॉक्सो अधिनियम, साइबर अपराध, मानव व्यापार से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। नाबालिग छात्रों को वाहन न चलाने की समझाइश दी गई साथ ही 18 वर्ष से ऊपर की आयु होने पर ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के बाद ही वाहन चलाने के लिए कहा गया। यातायात नियमों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई छात्रों व विद्यालयीन स्टाफ के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का सही उत्तर दिया गया, छात्राओं को भविष्य में यातायात नियमों का उल्लंघन ना करने के लिए संकल्पित किया गया साथ ही पूछे गए प्रश्नों के सही जवाब देने वालों को पुरस्कृत किया गया। उक्त जागरूकता अभियान के दौरान विकासखंड शिक्षा अधिकारी अरविंद सिंह, खंड स्त्रोत समन्वयक एरोन लकड़ा, विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य देवदत्त सिंह, वीरेंद्र तिवारी, सुखलाल राजवाड़े,सैनिक राजेश खलखो सहित विद्यालयीन स्टाफ एवं काफी संख्या में छात्र- छात्रा उपस्थित रहे। महेश मिश्रा ने यातायात के अनिवार्य की जानकारी दी- यातायात लांस नायक महेश मिश्रा द्वारा यातायात के अनिवार्य, चेतावनी एवं सूचनात्मक चिन्हों की जानकारी के साथ यातायात संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए चौराहा पार करने का नियम, ट्रैफिक सिग्नल लाइट, हाथों के संकेतों के माध्यम से यातायात व्यवस्था का संचालन, हेलमेट और सीट बेल्ट की अनिवार्यता, दो पहिया वाहन में तीन सवारी ना चलना, वाहन चलाते समय मादक द्रव्यों का सेवन ना करना, तेज गति व लापरवाही पूर्वक वाहन ना चलाना, प्रेशर हॉर्न का उपयोग ना करना, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करने, ज़ेब्रा क्रॉसिंग रेलवे क्रॉसिंग, गुड समेरिटन, लाइसेंस बनवाने के नियम, दुर्घटना के कारण, दुर्घटना घटित होने पर चालक के कर्तव्य, सड़क सुरक्षा मितान, सड़क पर वाहन चलाने का सही तरीका, मोटर व्हीकल एक्ट की विभिन्न धाराएं व उसमें निर्धारित जुर्माने की राशि से संबंधित जानकारी प्रदान की गई एवं जीवन में यातायात नियमों के पालन करने की शपथ दिलाई गई।

पुलिस महानिरीक्षक ने जिला पुलिस कप्तान के कार्यों की सराहना की

सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के दिए निर्देश

-संवाददाता-
कोरबा,28 फरवरी 2024 (घटती-घटना)।

बिलासपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक डॉ. संजीव शुक्ला अपनी पदस्थापना के बाद पहली बार कोरबा प्रवास पर पहुंचे। इस दौरान पुलिस कप्तान सिद्धार्थ तिवारी ने उनका स्वागत किया । अपने प्रथम कोरबा आगमन पर उन्होंने पुलिस अधीक्षक कार्यालय सभागार में राजपत्रित पुलिस अधिकारियों और थाना-चौकी प्रभारियों की बैठक लेकर अपराधिक मामलों की जानकारी लेकर दिए आवश्यक निर्देश । इस दौरान उन्होंने मीडिया से चर्चा कर कहा कि छत्तीसगढ़ शासन के निर्देश और मंशा अनुसार सट्टा, जुआ,शराब,कबाड़ जैसे तमाम अवैधानिक और अपराधिक कार्यों पर कठोरता से अंकुश लगाने का कार्य किया जा रहा है,साथ ही कोरबा जिले के नवपदस्थ पुलिस कप्तान श्री सिद्धार्थ तिवारी के कार्यों की सराहना करते हुए कहा के उनके कोरबा आने के बाद से अपराधिक कार्यों में लिप्त लोगों पर कार्यवाही किया जा रहा है । उन्होंने कहा कि पुलिस से लोगों की अपेक्षाएं कुछ ज्यादा होती हैं, ऐसे में पुलिस का दायित्व बनता है कि वे लोगों की अपेक्षाओं पर खुद को खरा साबित करें। उन्होंने कहा कि बेसिक पुलिसिंग में हमेशा बेहतर करने की गुंजाइश रहती है और पुलिस अधीक्षक इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। इस दौरान सड़क दुर्घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा के, जिले में हर साल 300 से अधिक लोगों की जान जा रही है,जो अत्यंत दुखद है इसके लिए पुलिस कोशिश कर रही है, जिससे सड़क दुर्घटना में 10 से 20 प्रतिशत की कमी लाई जा सके। साइबर अपराध की रोकथाम के लिए कहा कि जिला स्तर पर साइबर की टीम बनी हुई है, हाल ही में बिलासपुर में रेंज स्तर पर साइबर थाना शुरू किया गया है साथ ही सायबर के आधुनिक संसाधनों के लिए मुख्यालय स्तर पर भी कार्य हो रहा है और विशेषज्ञ कर्मियों को प्रशिक्षण देने के लिए आयोजन भी हो रहे हैं, जिससे प्रदेश भर में साइबर क्राइम में अंकुश लगाया जा सके ।

CMYK

इंडिया-इंग्लैंड मुकाबला सात मार्च को

- » धर्मशाला में इंग्लैंड की पहली बार होगी अग्नि परीक्षा
- » रोहित ब्रिगेड एक बार फिर अंग्रेजों को चटाना चाहेगी धूल
- » भारत-इंग्लैंड के बीच धर्मशाला में होगा आखिरी टेस्ट मैच
- » धर्मशाला में पहली बार होगा इंग्लैंड का टेस्ट
- » जीत का क्रम जारी रखने के लिए बुलंद हौसले के साथ उतरेगी भारतीय टीम

नई दिल्ली,28 फरवरी 2024। 5 दिवसीय मैचों की सीरीज का अंतिम मुकाबला धर्मशाला में सात से 3 मार्च को पहुंच जाएंगी दोनों टीम, अगले दिन से अभ्यास में जुटेंगी नीरज व्यास, धर्मशाला इंग्लैंड की टीम सात मार्च को धर्मशाला के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में पहली बार टेस्ट मैच खेलने के लिए उतरेगी। धौलाधार की तलहटी में स्थित इस खूबसूरत मैदान पर रोमांचक मैच देखने को मिलेगा। पांच मैचों की सीरीज को भारतीय टीम 3-1 से अपने नाम कर चुकी है और अंतिम मुकाबले को भी जीतने के लिए बुलंद हौसले के साथ उतरेगी।वहीं मेहमान इंग्लैंड की टीम सीरीज में हार का अंतर कम करने का प्रयास करेगी। जैक क्राउले, बेन डकेट, ओली पोप, जो रूट, जानी बेयरस्टो, बेन स्टोक्स, बेन फोक्स, टाम रोबिसन अपनी टीम के लिए बेहतर प्रदर्शन करना चाहेंगे।

जीत की लय बरकरार रखना चाहेगी भारतीय टीम

भारत की ओर से रविंद्र जडेजा, आर अश्विन और कुलदीप यादव धर्मशाला में आस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट मैच खेल चुके हैं। बाकी के खिलाड़ी इस मैदान में पहली बार उतरेंगे। भारत और इंग्लैंड की टीमें तीन मार्च को धर्मशाला पहुंच जाएंगी। अगले दिन से दोनों अभ्यास में जुट जाएंगी।जीत की लय बरकरार रखना चाहेगा भारत धर्मशाला में भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ जीत की लय बरकरार रखना चाहेगी। भारतीय टीम में कप्तान रोहित शर्मा, सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल, सरफराज खान, ध्रु व जुरैल अपनी बल्लेबाजी का दम दिखाते नजर आएंगे। इसके अलावा तेज गेंदबाज आकाशदीप और मुहम्मद सिराज आकर्षण का केंद्र रहेंगे।

ऑस्ट्रेलिया की प्लेइंग इलेवन का ऐलान

न्यूज़ीलैंड को लगा बड़ा झटका

नई दिल्ली, 28 फरवरी 2024। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम और ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के बीच टेस्ट सीरीज की शुरुआत 29 फरवरी से होने वाली है। सीरीज का पहला टेस्ट वेलिंग्टन में खेला जाएगा।कंगारू टीम ने इस मुकाबले के लिए अपनी प्लेइंग इलेवन का ऐलान कर दिया है। वहीं, दूसरी तरफ न्यूजीलैंड को बड़ा झटका लगा है। टीम के स्टार खिलाड़ी डेवोन कॉनवे चोटिल होने के कारण पहले टेस्ट से बाहर हो गए हैं।कंगारू टीम ने अपनी प्लेइंग इलेवन में ज्यादा बदलाव नहीं किया है। स्टीव स्मिथ को टीम प्रबंधन ने सलामी बल्लेबाजी करने का एक और मौका दिया है। उनके जोड़ीदार उस्मान ख्वाजा होंगे।टीम में एकमात्र स्पिन गेंदबाज नाथन लियोन हैं।ऑस्ट्रेलिया की प्लेइंग इलेवन~ स्टीव स्मिथ, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन, कैमरून ग्रीन, ट्रैविस हेड, मिचेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिचेल स्टार्क, नाथन लियोन और जोश हेजलवुड।

कॉनवे को पाकिस्तान क्रिकेट टीम के खिलाफ खेली गई टी-20 सीरीज के दौरान अंगूठे में चोट आ गई थी। इसी कारण वह पहला टेस्ट मैच नहीं खेलेंगे।8 मार्च को दूसरा टेस्ट मैच खेला जाना है। वह इस मुकाबले के लिए उपलब्ध होंगे या नहीं ये अभी साफ नहीं हो पाया है। उनकी जगह हेनरी निकोल्स को टीम में मौका मिला है।केन विलियमसन पहले ही इस टेस्ट मैच से बाहर हैं। निकोल्स ने कीवी टीम के लिए अब तक 56 टेस्ट मुकाबले खेले हैं। इसकी 87 पारियों में इस खिलाड़ी ने 7 बार नाबाद रहते हुए 2,973 रन बनाए हैं।उनकी औसत 37.16 की रही है। उनके बल्ले से 9 शतक और 12 अर्धशतक निकले हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 200 रन रहा है। वह 7 बार नाबाद भी रहे हैं।उन्होंने अपना आखिरी टेस्ट मुकाबला बांग्लादेश क्रिकेट टीम के खिलाफ साल 2023 में खेला था।

ऑस्ट्रेलिया का न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट में कमाल का रिकॉर्ड रहा है। अब तक दोनों टीमें कुल 60 टेस्ट में आमने-सामने हुई है, जिसमें से 34 टेस्ट कंगारू टीम ने जीते हैं, जबकि सिर्फ 8 टेस्ट में कीवी टीम को जीत मिली है।इनके अलावा 18 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं। न्यूजीलैंड ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपने घर पर 5 टेस्ट जीते हैं और 14 में हार झेली है। इस बीच 7 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं।

संक्षिप्त खेल समाचार

बोपन्ना-एब्डेन और युकी-हासे की जोड़ी आगे बढ़ी

नई दिल्ली, 28 फरवरी 2024। शीर्ष वरीयता प्राप्त रोहन बोपन्ना और उनके ऑस्ट्रेलियाई साथी मैथ्यू एब्डेन ने यहां ट्यूनीशियाई-पाकिस्तानी जोड़ी स्कंडर मंसूरी और ऐसाम-उल-हक कुरेशी पर सीधे सेटों में जीत के साथ दुबई ड्यूटी फ्री टेनिस चैंपियनशिप के पुरुष युगल क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।पिछले महीने ऑस्ट्रेलियन ओपन जीतने वाले बोपन्ना और एबडेन को मंगलवार रात राउंड 16 में मंसूरी और कुरेशी को 7-6(4) 7-6(5) से हराने में एक घंटे 41 मिनट का समय लगा।

ऑस्ट्रेलियन ओपन में पुरुष युगल खिताब जीतने के बाद पहली बार बाहर हुए बोपन्ना और एबडेन का क्वार्टर फाइनल में उरुग्वे के एरियल बेहार और चेक एडम पावलासेक से मुकाबला होगा।एक अन्य भारतीय, युकी भांबरी और उनके डच साथी रॉबिन हासे भी राउंड 16 के मैच में कजाकिस्तान के अलेक्जेंडर बुब्लिक और फ्रांस के एड्रियन मन्नारिनो को 6-7(6) 6-3 10-8 से हराकर क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए।युकी और हासे का अगला मुकाबला बेल्जियम के सैंडर गिल और जोरान व्लिगेन की जोड़ी और जमाल मरे और माइकल वीनस की तीसरी वरीयता प्राप्त इंग्लिश-कीवी जोड़ी के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा।

सिडनी सिक्सर्स ने चार्लोट एडवर्ड्स को अगले दो वर्षों के लिए मुख्य कोच के रूप में फिर से नियुक्त किया

सिडनी,28 फरवरी 2024। सिडनी सिक्सर्स ने इंग्लैंड की महान चार्लोट एडवर्ड्स को अगले दो वर्षों के लिए महिला बिग बैश लीग (डब्ल्यूबीबीएल) के मुख्य कोच के रूप में घोषित किया क्योंकि उनका लक्ष्य अगले सीज़न में प्लेऑफ़ में वापसी करना है। सिडनी सिक्सर्स ने एक आधिकारिक बयान में कहा, डब्ल्यूबीबीएल708 से पहले सिक्सर्स में शामिल होने के बाद, एडवर्ड्स जल्द ही क्लब का एक बहुत चहेता सदस्य बन गया, जिसने शीर्ष पद पर रहते हुए अपने पहले सीज़न में डब्ल्यूबीबीएल फाइनल के लिए टीम को कोचिंग दी।

इंग्लैंड की पूर्व कप्तान, एडवर्ड्स महिलाओं के खेल में सबसे सम्मानित शख्सियतों में से एक हैं और अब वह इसके सबसे सफल कोचों में से एक हैं।

यशस्वी टेस्ट रैंकिंग में 12वें स्थान पर आए

- » आईसीसी ने जारी की रैंकिंग;बॉलिंग में बुमराह टॉप पर बरकरार

नई दिल्ली, 28 फरवरी 2024। भारतीय ओपनर यशस्वी जायसवाल आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में 12वें नंबर पर पहुंच गए हैं। बुधवार को जारी ताजा टेस्ट बैटिंग रैंकिंग के टॉप-10 में भारत का केवल एक बल्लेबाज शामिल हैं। विराट कोहली को 2 स्थान का नुकसान हुआ है, वे 9वें नंबर पर खिसक गए हैं। न्यूजीलैंड के केन विलियमसन टॉप पर बरकरार हैं। बॉलिंग रैंकिंग में भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह टॉप पर कायम हैं, जबकि दूसरे नंबर आर अश्विन काबिज हैं। तीसरे नंबर पर साउथ अफ्रीका के कगिसो रबाडा हैं। यशस्वी करियर बेस्ट 12 वें पोजिशन पर पहुंचे। यशस्वी ने कप्तान रोहित शर्मा को पीछे छोड़ दिया है, जो एक स्थान के नुकसान के साथ 13 वें स्थान पर फिसल गए हैं। यशस्वी ने पांच मैचों की सीरीज के पहले चार टेस्ट में ही 655 रन बना दिए हैं। इस तरह वे सीरीज में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैंजसप्रीत बुमराह आईसीसी की टेस्ट बॉलर्स रैंकिंग में नंबर-1 गेंदबाज बने हुए हैं। ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन दूसरे नंबर पर हैं। तीसरे स्थान पर साउथ अफ्रीका के कगिसो रबाडा हैं। बुमराह 8 फरवरी को जारी रैंकिंग में टेस्ट में नंबर-1 पोजिशन हासिल करने वाले पहले भारतीय तेज गेंदबाज बने थे टॉप-5 ऑलराउंडर्स में 3 भारतीय ऑलराउंडर्स रैंकिंग में रवींद्र जडेजा पहले और अश्विन दूसरे नंबर पर हैं। अक्षर पटेल पांचवें नंबर पर हैं। इस तरह टॉप-5 टेस्ट ऑलराउंडर्स रैंकिंग में 3 भारतीय शामिल हैं।ऑलराउंडर्स में तीसरे नंबर पर बांग्लादेश के शाकिब अल हसन और चौथे नंबर पर इंग्लैंड के जो रूट हैं। कप्तान बेन स्टोक्स 3 स्थान के नुकसान के साथ सातवें नंबर पर पहुंच गए। टीम इंडिया टेस्ट टीम रैंकिंग में दूसरे नंबर पर है। ख्ब्रष्ट न्यूजीलैंड टॉप पर हैं। टीम इंडिया वनडे और टी-20 में पहले नंबर की टीम है। वनडे में ऑस्ट्रेलिया और टी-20 में न्यूजीलैंड दूसरे नंबर पर है।

12 वीं पोजिशन पर पहुंचे लेफ्टी ओपनर यशस्वी टेस्ट बैटिंग रैंकिंग में तीन स्थान की छलांग के साथ करियर

इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें टेस्ट में बुमराह की होगी वापसी

धर्मशाला, 28 फरवरी 2024। जसप्रीत बुमराह को टीम इंडिया ने रांची टेस्ट से ब्रेक दिया था। बुमराह इंग्लैंड के खिलाफ शुरुआती तीनों टेस्ट मैचों में खेले थे। लेकिन अब उनकी फिर से वापसी होगी। भारत और इंग्लैंड के बीच 7 मार्च से धर्मशाला में टेस्ट सीरीज का आखिरी मुकाबला खेला जाएगा। बुमराह इस मैच में खेलते हुए दिख सकते हैं। टीम मैनेजमेंट खिलाड़ियों के वर्कलोड पर विशेष ध्यान दे रहा है। इस वजह से लगातार खेल रहे प्लेयर्स को ब्रेक भी दिया जा सकता है। .

धर्मशाला टेस्ट से बाहर होंगे केएल राहुल,इलाज के लिए गए लंदन

नई दिल्ली, 28 फरवरी 2024। भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट सीरीज का आखिरी मैच 7 मार्च से खेला जाएगा। यह मुकाबला धर्मशाला में खेला जाना है. टीम इंडिया के दिग्गज खिलाड़ी केएल राहुल इस मैच से बाहर हो सकते हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो राहुल इलाज के लिए लंदन गए हैं।. राहुल इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज के पहले मैच में खेले थे। लेकिन इसके बाद पिछले तीन मैच नहीं खेल पाए थे। उनकी मांसपेशियों में दर्द है।

राहुल टीम इंडिया के लिए हैदराबाद टेस्ट में खेले थे.। लेकिन इसके बाद से टीम से बाहर चल रहे हैं. उनकी दाहिने क्वाड्रिसेप्स में दर्द की शिकायत थी। इस बीच खबर आई थी कि राहुल राजकोट टेस्ट खेल सकते हैं।. लेकिन वे राजकोट टेस्ट में नहीं खेल पाए। इसके बाद लगातार टीम से बाहर चल रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक राहुल इलाज के लिए लंदन गए हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की सिलेक्शन कमेट राहुल को लेकर किसी भी तरह का रिस्क नहीं लेना चाहती है। राहुल अब धर्मशाला टेस्ट में खेलेंगे या नहीं इस पर संशय बना हुआ है। हालांकि उनकी वापसी की संभावना काफी कम है।

हॉकी इंडिया ने गुटबाजी और मतभेद के आरोपों को किया खारिज

पूर्व सीईओ एलेना नॉर्मन ने लगाए थे आरोप

नई दिल्ली, 28 फरवरी 2024।हॉकी इंडिया में गुटबाजी और आपसी मतभेदों के आरोपों को खारिज करते हुए महासंघ के अध्यक्ष दिलीप टिर्की और महासचिव भोलानाथ सिंह ने बुधवार को एक संयुक्त बयान में कहा कि हॉकी की बेहतरी के लिये वे मिलकर काम करते रहेंगे।हॉकी इंडिया द्वारा जारी संयुकत बयान में उन्होंने कहा ,'' हाल ही में कुछ निवर्तमान अधिकारियों ने मीडिया में कहा है कि हॉकी इंडिया में गुटबाजी है। यह सही नहीं है। हॉकी के हित के लिये हम एकजुट होकर काम करते रहेंगे।'' 13 साल बाद भारतीय हॉकी से नाता

तोड़ने के बाद पूर्व सीईओ एलेना नॉर्मन ने कहा था कि हॉकी इंडिया में जिस तरह का माहौल बन गया था , उसमें काम करना मुश्किल होता जा रहा था और ऐसे में उनके पास त्यागपत्र देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। उन्होंने कहा था कि हॉकी इंडिया में दो गुट हैं। एक तरफ वह और (अध्यक्ष) दिलीप टिर्की हैं तथा दूसरी तरफ (सचिव) भोलानाथ सिंह, (कार्यकारी निदेशक) कमांडर आर के श्रीवास्तव और (कोषाध्यक्ष) शेखर जे मनोहरन हैं। इससे पहले महिला हॉकी टीम की कोच यानेके शॉपमैन ने भी महिला हॉकी के प्रति पक्षपातपूर्ण रवैये और सम्मान की कमी का आरोप लगाकर इस्तीफा दिया था।

मंधाना अपने फैसलों को लेकर सक्रिय और साहसी रही हैं: सोफी डिवाइन

बेंगलुरू,28 फरवरी 2024। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की ऑलराउंडर सोफी डिवाइन का मानना है कि स्मृति मंधाना अपने फैसलों को लेकर सक्रिय और साहसी रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप फ्रेंचाइजी अब डब्ल्यूपीएल 2024 अंक तालिका में शीर्ष पर है।गेंदबाजों ने गुजरात जायंट्स को 107/7 पर रोककर आरसीबी के लिए आठ विकेट से जीत दर्ज की, इसके बाद स्मृति ने 27 गेंदों में 43 रन बनाकर शानदार लय में रहते हुए मेजबान टीम के लिए लक्ष्य का पीछा करना आसान बना दिया।यह स्मृति और आरसीबी के लिए एक शानदार शुरुआत रही है, जिन्होंने डब्ल्यूपीएल 2023 में अपने पहले पांच मैच हारने के बाद अब दो ठोस जीत हासिल की हैं और अंततः नॉकआउट के लिए बस से चूक गए। यह शानदार रहा। मुझे लगता है कि उसने पिछले सीजऩ से बहुत कुछ सीखा है। कभी-कभी यह कठिन था, उसके कंधों पर बहुत

अधिक भार था। लेकिन वह शानदार रही है।वह अपने फैसलों को लेकर सक्रिय और साहसी रही है और मुझे लगता है कि इसका प्रभाव टीम के बाकी सदस्यों तक भी पहुंच गया है। इस समूह के भीतर एक वास्तविक शांति है। हर कोई स्मृति को देखना पसंद करता है जब वह आक्रामक होती है और जिस तरह से बल्लेबाजी करती है। मुझे लगता है सोफी ने मैच खत्म होने के बाद जियोसिनेमा पर कहा, कप्तानी और मैदान पर आने वाला आत्मविश्वास उनकी बल्लेबाजी में आ रहा है। सीम-बॉलिंग ऑलराउंडर भी एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में भारी भीड़ से आश्चर्यचकित रह गए, जिन्होंने आरसीबी के लिए जोरदार उत्साह बढ़ाया। यह अविश्वसनीय है। यह मेरे करियर में सबसे बड़ी भीड़ है जिसके सामने मैं खेला हूं। जब आरसीबी का नारा बढ़ता है, तो यह बहरा कर देने वाला होता है, ऐसा लगता है कि वहां 12वां खिलाड़ी मौजूद है।

बदमाशी का सामना करने पर शाहिद कपूर को स्वीकार नहीं किया गया

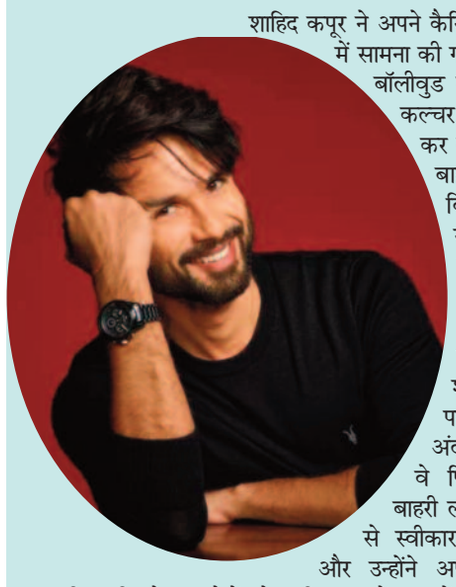

शाहिद कपूर ने अपने कैरियर की शुरुआत में सामना की गई चुनौतियों और बॉलीवुड में प्रचलित कैंप कल्चर के बारे में खुल कर बात की है, और बाहरी लोगों का विशेष रूप से स्वागत नहीं करने के लिए उद्योग की आलोचना की है। खुद को एक मानते हुए, शाहिद ने इस बात पर प्रकाश डाला, अंदरूनी लोग नहीं वे फिल्म उद्योग में बाहरी लोगों को आसानी से स्वीकार नहीं करते हैं, और उन्होंने अपने साथियों से आग्रह किया कि वे नए लोगों को खारिज न करें या उन्हें कमतर न आंकें। नो फिल्टर नेहा पर बिना रोक-टोक के बातचीत में, अभिनेता पंकज कपूर और नीलिमा अज़ीम के घर जन्मे शाहिद ने याद करते हुए कहा, जब मैंने उद्योग में प्रवेश किया, तो मुझे एहसास हुआ कि यह एक स्कूल की तरह है। बहार वाले को आसान से स्वीकार नहीं करते ये लोग, इनको बड़ी समस्या होती है के तुम आ कैसे गए अंदर (वे बाहरी लोगों को आसानी से स्वीकार नहीं करते। यह उनके लिए एक बड़ी समस्या है - आप अंदर आने में कैसे कामयाब हुए) उन्होंने अपना दुख व्यक्त करते हुए कहा, तो, कई वर्षों तक, आप उससे निपटते हैं।

अनन्या पांडे गहनियां की सह-कलाकार दीपिका पादुकोण से चुराई थीं

अनन्या पांडे और दीपिका पादुकोण ने 2022 की फिल्म गहराइयां में स्क्रीन स्पेस साझा किया, जो उस वर्ष चर्चा का एक बड़ा विषय बन गया। फिल्म में दोनों अभिनेत्रियों के अभिनय को दर्शकों के साथ-साथ समीक्षकों ने भी सराहा। जहां प्रशंसक उन्हें बड़े पर्दे की फिल्म में एक साथ देखने का इंतजार कर रहे हैं, वहीं अनन्या ने एक ऐसी बात के बारे में खुलासा किया है जो वह दीपिका से चुराना चाहेंगी। दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने तीन चीजों का खुलासा किया है जो वह अपने गहराइयां सह-कलाकार से चुराना चाहेंगी। अनन्या पांडे ने बताया कि वह दीपिका पादुकोण से क्या चुराना चाहेंगी ईटाइम्स के साथ एक साक्षात्कार में, जब अनन्या पांडे से पूछा गया कि वह दीपिका पादुकोण से क्या चुराना चाहेंगी, तो अभिनेत्री ने कहा, दीपिका से उनके शरीर से या उनकी प्लेटों से। दीपिका के पास कुछ बहुत अच्छी क्रॉकरी हैं, और दक्षिण भारतीय हैं। उसके घर का खाना स्वादिष्ट है। इसलिए उसका शरीर और उसके घर का खाना स्वादिष्ट है। अनन्या, जिन्होंने हाल ही में अपना घर खरीदा है, ने स्वीकार किया कि उन्हें क्रॉकरी का शौक है। मुझे अभी एहसास हुआ कि मैं प्लेटों, कटोरे और चम्मचों को लेकर कितना जुनूनी हूं। मैंने अपने जीवन में कभी नहीं सोचा था कि मैं क्रॉकरी की तस्वीरें खींचने जा रहा हूं, लेकिन मैं सिर्फ उनसे प्यार करता हूं, यह मेरा नया जुनून है। अनन्या पांडे अक्षय कुमार की कॉमेडी फिल्मों की प्रशंसक हैं अनन्या पांडे, जो कथित तौर पर वकील और राजनेता सी. शंकरन नायर के जीवन पर आधारित आगामी फिल्म में अक्षय कुमार के साथ काम कर रही हैं, ने सुपरस्टार और उनकी कॉमेडी फिल्मों की प्रशंसा की। उसी साक्षात्कार में, अनन्या ने कहा, अक्षय सर ने सिनेमा में एक युग को परिभाषित किया है, जो अब तक मेरा पसंदीदा रहा है। उनकी हेरा फेरी, वेलकम, दे दना दन, भूल भुलैया और गरम मसाला जैसी फिल्में सबसे प्रतिष्ठित रही हैं। मेरे लिए फिल्में। मैं इसे बार-बार 100 बार देख सकता हूं; उन्होंने मुझे बहुत हंसाया है। अनन्या पांडे का वर्क फ्रंट अनन्या पांडे ने 2019 में स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2 से बॉलीवुड में डेब्यू किया और तब से उन्होंने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में अपने लिए एक ठोस जगह बना ली है। अभिनेत्री ने पति पत्नी और वो, खाली पीली, गहराइयां, ड्रीम गर्ल 2 और खो गए हम कहां जैसी सबसे चर्चित बॉलीवुड और ओटीटी फिल्में की हैं। उनकी आगामी परियोजनाओं में अमेज़ॅन प्राइम की कॉल मी बे और विक्रमादित्य मोटवानी के साथ कंट्रोल शामिल हैं।

रवीना टंडन शादी में सफेद साड़ी में बेहद खूबसूरत लग रही

अभिनेत्री रवीना टंडन, जो एक उत्साही सोशल मीडिया उपयोगकर्ता हैं, ने बुधवार को एक शादी के लिए खूबसूरती से सजी हुई सफेद साड़ी पहने हुए अपनी कुछ खूबसूरत तस्वीरें साझा कीं। रवीना ने अपने 8.5 मिलियन प्रशंसकों को एक शादी की अपनी मनमोहक तस्वीरें दीं। तस्वीरों की श्रृंखला में रवीना को बॉर्डर पर मोती की सजावट वाली सफेद साड़ी पहने हुए एक बगीचे में पोज़ देते हुए दिखाया गया है। उन्होंने भारी मोती डिजाइन वाला मैचिंग ब्लाउज चुना। मेकअप के लिए रवीना ने चमकदार गुलाबी होंठ, काली आईलाइनर, काजल लगी आंखें और हाइलाइट किए हुए गालों को चुना। उसके बालों को बीच से अलग किया गया था और एक निचले बन में बांधा गया था, जिस पर सफेद फूल लगे हुए थे। हाल ही में वेब सीरीज कर्मा कॉलिंग में नजर आई अभिनेत्री ने हरे और सफेद रंग का चोकर नेकलेस, मैचिंग अंगूठी, झुमके और मांग टीका पहना हुआ था। उन्होंने शाहिद कपूर और कृति सेनन अभिनीत फिल्म तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया के गाने तुम से की धुन दी। पोस्ट का शीर्षक इस प्रकार है वेडिंग व्हाइट्स. पेशेवर मोर्चे पर, रवीना की अगली फिल्म घुड़चढ़ी और वेलकम टू द जंगल है।

खेलमंत्री ने विधानसभा में पूर्व सरकार के लापरवाही का मामला उठाया

» पांच साल में भूपेश सरकार में उत्कृष्ट खिलाड़ियों को न तो सम्मान मिला न ही नौकरी

» खेल मंत्री टंकराम के जवाब पर अध्यक्ष भी चौंके

रायपुर,28 फरवरी 2024(ए)। विधानसभा में आज प्रदेश के खिलाड़ियों को लेकर चिंता की गई। भाजपा विधायक लता उसेंडी की अनुपस्थिति पर सदन में उनकी ओर से पार्टी के विधायक सुशांत शुक्ला ने प्रश्नकाल में उत्कृष्ट खिलाड़ियों के चयन और शासकीय सेवा में नियुक्ति को लेकर मामला उठाया। इस पर खेल मंत्री टंकराम वर्मा ने बताया कि भूपेश बघेल की सरकार आने के बाद पिछले सालों में न तो उत्कृष्ट खिलाड़ियों की सूची प्रकाशित हुई, न कोई अलंकरण समारोह हुआ और न ही उन्हें नौकरी दी गई है।

अध्यक्ष ने की ये टिप्पणी...

इस मुद्दे पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह ने टिपण्णी करते हुए कहा, 5 सालों में इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया, ये अद्भुत है। मंत्री टंकराम वर्मा ने आगे कहा, विष्णुदेव साय सरकार खिलाड़ियों की बेहतरी के लिए तमाम कदम उठा रही है।

जल्द ही होगा अलंकरण समारोह

मंत्री ने बताया कि जल्द ही अलंकरण समारोह होने वाला है। आगे भी अलंकरण और उत्कृष्ट खिलाड़ी घोषित करने की प्रक्रिया होगी।

पीएसयू में नौकरी के लिए कहें

खिलाडियों को लेकर हो रही चर्चा के दौरान मंत्री ने बताया कि सरकारी विभागों में उत्कृष्ट खिलाड़ियों को नौकरी के लिए आरक्षण है। इस पर सुशांत शुक्ला ने कहा कि प्रदेश में संचालित सार्वजानिक प्रतिष्ठानों को भी खिलाडियों को नौकरी देने के लिओए लिखा जाये।

एमएलए धरमजीत ने कहा पता नहीं कहां-कहां

भाजपा विधायक धरमजीत सिंह ने कहा, पिछली सरकार में वास्तविक खिलाड़ियों को नौकरी नहीं मिलता था, पता नहीं कहां-कहां से लाते थे। उन्होंने इस पर चिंता जताते हुए कहा कि प्रदेश के उत्कृष्ट खिलाड़ियों को नौकरी देने के प्रावधान को लेकर पूछा कि अब प्रदेश में खिलाडियों को नौकरी मिलेगी या नहीं ?

सदन में उठा जंगल सफारी में वन्यजीवों की मौत का मुद्दा

मंत्री कश्यप ने किया ये एलान

छत्तीसगढ़ विधानसभा के बजट सत्र का आज 17वां दिन था। सदन में आज जंगल सफारी में वन्यजीवों की मौत का मुद्दा गूंजा। कांग्रेस विधायक शेषराज हरबंस ने वन्यजीवों की मौत का मुद्दा उठाया। वनमंत्री केदार कश्यप ने विधायक के सवाल पर जवाब देते हुए कहा कि 2023 से जनवरी 2024 के बीच 74 वन्यजीवों की जंगल सफारी में मौत हुई है। इसके साथ मंत्री ने सेंट्रल जू अथॉरिटी से जांच कराने का एलान किया।

मंत्री केदार कश्यप ने बताया वन्यजीवों के मौत का कारण

वन मंत्री केदार कश्यप ने बताया कि जंगल सफारी के वन्यजीवों को आवश्यक दवाएं दी जा रही है। टीकाकरण का प्रयास भी किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि किसी वन्यजीव की उम्र ज्यादा हो गई थी, तो कुछ लोगों की आपसी झगड़े में मौत हुई। वन्य प्राणियों के सुरक्षा की व्यापक व्यवस्था है,

चिकित्सा का कंपाउंडर भी है।

2 डॉक्टरों को शोकॉज नोटिस जारी

विधायक शेषराज हरबंस ने पूछा कि इस मामले में किसी अधिकारी और डॉक्टर के लापरवाही सामने आई है क्या? इस पर मंत्री ने सेंट्रल जू अथॉरिटी से इसकी जांच कराने का ऐलान किया। डॉ. राकेश वर्मा और कंपाउंडर सोनल मिश्रा के खिलाफ को शोकॉज नोटिस जारी किया गया है। इस पर विधानसभा अध्यक्ष ने सुझाव दिया कि किसी बेदाग और कुशल डॉक्टर को वहां भेजे।

जंगल सफारी में 51 दिनों में 9 वन्य जीवों की हुई मौत

नवा रायपुर स्थित जंगल सफारी में 51 दिनों (1 दिसंबर 2023 से20 जनवरी 2024) के बीच कुल 9 वन्य जीवों की मौत हुई है। इनमें 2 काला हीरण व एक चीतल की मौत स्वभाविक है। वहीं, एक नील गाय की मौत प्रसव के दौरान हुई। एक कोटरी अत्यधिक ठंड के कारण दम तोड़ दिया। 2 नील गायों की मौत की वजह आंतरिक चोट बताई गई है। एक चौसिंगा व एक चीतल की मौत निमोनिया के कारण हुई है।

वन मंत्री केदार कश्यप ने यह जानकारी नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत के एक प्रश्न के लिखित उत्तर में दी है। वन मंत्री ने बताया है कि जंगल सफारी में 2 वन्यप्राणी डॉक्टर रखे गए हैं। मंत्री ने यह भी बताया है कि वन्य जीवों के संबंध में जू कीपर्स पहली सूचना वन्यप्राणी डॉक्टरों को देते हैं।

तय समय से पहले समाप्त हुआ विधानसभा का बजट सत्र

छत्तीसगढ़ विधानसभा का बजट सत्र का समापन हो गया है। बता दें सत्र के तय कार्यक्रम के मुताबिक 2 मार्च तक सदन की कार्रवाई चलनी थी, तीन दिन पहले ही अनिश्चितकाल के लिए सत्र समाप्त हो गया।इस बार बजट सत्र में 17 दिन तक सत्र की कार्यवाही चली। 5 फरवरी को बजट सत्र की शुरुआत हुई थी, 9 फरवरी को वित्तीय वर्ष 2024-25 का बजट पेश किया गया। उससे पहले राज्यपाल के अभिभाषण से सत्र की शुरुआत हुई थी। बजट के बाद विभागवार चर्चा की शुरुआत हुई, जो 26 फरवरी तक चली।

26 फरवरी को मुख्यमंत्री के विभागों के अनुदान मांगों पर चर्चा के बाद ही कयास लग रहे थे कि सत्र का तय समय के पहले ही सत्रावसान हो सकता है। कल विनियोग लाया गया था, जिसके बाद आज सदन की कार्यवाही अनिश्चतकाल के लिए स्थगित कर दिया गया।

सामुदायिक भवन पर पूर्व मंत्री की पत्नी के कब्जे की होगी उच्च स्तरीय जांच

नगरीय निकाय मंत्री ने किया एलान

विधानसभा के बजट सत्र के 17 वें दिन ध्यानाकर्षण में रायपुर के शताब्दी नगर स्थित सामुदायिक भवन पर पूर्व मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया की पत्नी शकुन डहरिया के कब्जे का मामला उठा. सदन में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच हुई तीखी बहस के बीच नगरीय निकाय मंत्री अरुण साव ने उच्च स्तरीय जांच की घोषणा की

विधानसभा में ध्यानाकर्षण सामुदायिक भवन पर पूर्व मंत्री की पत्नी के कब्जे का मामला उठाए जाने पर नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत ने आपत्ति जताई. उन्होंने

कहा कि यह प्रकरण न्यायालय के अधीन है, ऐसे प्रकरणों पर सदन में चर्चा नहीं की जा सकती है. नेता प्रतिपक्ष की आपत्ति के बीच राजेश मूणत ने ध्यानाकर्षण पढ़ा.

नगरीय निकाय मंत्री अरुण साव ने कहा कि ये सही है उच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत हुई है. राजश्री समिति का सामुदायिक भवन में कब्जा है, उसे मुक्त करा लिया गया है. रंग रोगन सहित अन्य कार्यों में स्मार्ट सिटी 84.89 लाख व्यय किया गया है. सरकारी संपत्ति की सुरक्षा सरकार की जिम्मेदारी बताते हुए उन्होंने तीन महीने में जांच कराने का एलान किया.

सीएम हाउस में युवक के पिस्तौल लेकर घुसने से मचा हड़कम्प

» सीएम विष्णुदेव की सुरक्षा में गंभीर चूक

» 8 सुरक्षाकर्मी सस्पेंड

रायपुर,28 फरवरी 2024 (ए)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सुरक्षा में गंभीर चूक हुई है। सीएम हाउस में एक युवक पिस्तौल लेकर पहुंच गया। इस मामले में सीएम सिक्यूरिटी के आठ अधिकारियों और जवानों को सस्पेंड कर दिया गया है।

घटना 25 फरवरी की है। एक युवक लायसेंसी पिस्तौल लेकर अस्थायी सीएम हाउस पहुना पहुंच गया। मेन गेट पर उसकी चेकिंग इसलिए नहीं हो पाई क्योंकि वह सीएम हाउस के स्टाफ की गाडी में अंदर गया था। युवक जब सीएम कक्ष के सामने पहुंच गया तो वहां लास्ट चेकिंग प्वाइंट पर पिस्तौल पकड़ा गया। युवक से पिस्तौल बरामद होते ही हड़कंप मच गया। इसे सीएम सिक्यूरिटी में गंभीर लापरवाही मानी जा रही है।

सीएम को जेड प्लस सुरक्षा मिली है। इसके बाद उनके निवास के भीतर युवक पिस्तौल लेकर पहुंच गया। इस मामले में सीएम हाउस सिक्यूरिटी में तैनात आठ अधिकारियों और जवानों को सस्पेंड कर दिया गया है। एसपी सीएम सिक्यूरिटी प्रफुल्ल ठाकुर ने बताया कि आठ पुलिसकर्मियों को इस मामले में निलंबित क दिया गया है। घटना की जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

दरअसल, दरसअल, घटना 25 फरवरी की है। बताया जा रहा है कि, घटना वाले दिन सीएम साहब दौरे पर थे। इस दौरान एक व्यक्ति वीआईपी वाहन में बैठकर अंदर पहुंचा था। वीआईपी गाड़ी होने के चलते अस्थायी सीएम हाउस पहुना के गेट पर खड़े सुरक्षा कर्मचारियों ने पिस्टल पकड़े व्यक्ति की चेकिंग नहीं की। व्यक्ति सीधे सीएम हाउस के अंदर घुस गया। इधर जैसे ही इस बात की जानकारी हुई कि एक व्यक्ति सीएम हाउस पहुंचा है, जिसके पास पिस्तौल भी है। फिर क्या था, सीएम सुरक्षा में हड़कंप मच गया। सुरक्षा कर्मियों ने तत्काल उस व्यक्ति को हिरासत में लिया और उससे पूछताछ की। व्यक्ति ने खुद को जशपुर का बताया और लाइसेंसी पिस्तौल होना बताया। फिलहाल इस सनसनीखेज मामले को गम्भीरता से लेते हुए 8 अधिकारी कर्मचारियों को सस्पेंड कर दिया गया है।

सीएम सुरक्षा में चूक मामले में सुधारात्मक एक्शन लिए जा रहेः डीजीपी एडीजी गुप्त वार्ता ने पूरे मामले में कार्रवाई की

सीएम सुरक्षा चूक के मामले में डीजीपी अशोक जुनेजा का बड़ा बयान सामने आया है। डीजीपी अशोक जुनेजा ने कहा कि, एडीजी गुप्त वार्ता ने पूरे मामले में अच्छी कार्रवाई की है। सीएम सुरक्षा में सेंध के मामले को बहुत गंभीरता से लिया गया है। प्रशासन द्वारा लगातार सुधारात्मक एक्शन लिए जा रहे हैं। पिस्टल लेकर सीएम हाउस पहुंचे व्यक्ति पर भी कार्रवाई की जा रही है।

जुनेजा ने कहा मामले की जांच चल रही,और भी अफसरों पर गिर सकती है गाज

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सुरक्षा में बड़ी चूक मामले में डीजीपी अशोक जुनेजा ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा, सिक्योरिटी इंटेलिजेंस इस मामले को देख रहे हैं। कुछ लोगों को निलंबित किया गया है.। मामले की जांच चल रही है. आगे भी कार्रवाई हो सकती है। भविष्य में इस तरह की घटना ना हो, इस पर सिक्योरिटी इंटेलिजेन्स देखेंगे। 25 फरवरी को सीएम विष्णुदेव साय से मुलाकात करने पहुंचा एक युवक पिस्टल लेकर सीएम हाउस में घुस गया था।

वह शख्स लाइसेंसी पिस्टल लेकर सीएम आवास तक आ गया था, लेकिन सीएम कक्ष के बाहर उसे रोक लिया गया।. फिर उस शख्स की पिस्टल जब्त कर ली गई.। बताया जा रहा है कि यह शख्स गाड़ी में आया था, जिसके चलते उनकी चेकिंग नहीं की गई थी। सीएम सुरक्षा में हुई चूक के मामले में एडीजी इंटेलिजेंस ने 3 सुरक्षाकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है। अभी और सुरक्षा अधिकारियों पर गाज गिर सकती है.।मामले की जांच के आदेश भी दे दिए गए हैं। मामले की जांच की जा रही है।

राजधानी रायपुर समेत प्रदेश के अधिकारियों के बीच उस वक्त हड़कंप मच गया जब प्रदेश के मुखिया विष्णुदेव साय की सुरक्षा में बड़ी चूक हो गई। एक शख्स हथियार के साथ सीएम साय के कक्ष तक पहुँच गया था।जब उसकी जांच की गई तो उसके पास से एक पिस्टल बरामद हुई। सुरक्षा में तैनात जवानों ने सीएम कक्ष के बाहर ही रोककर उससे पिस्टल जब्त की। इस मामले में सीएम आवास पर तैनात आठ सिपाहियों को निलंबित कर दिया गया हैं। पूरे मामले की जाँच की जा रही हैं। पूरी घटना सीएम के अस्थाई आवास 'पहुना' की हैं।

पीएससी के पूर्व चेयरमैन सहित कई लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज

» इस थाने में की गई शिकायत...

» किस धारा में अपराध हुआ दर्ज...

रायपुर,28 फरवरी 2024 (ए)। सीजीपीएसी में हुए घोटाले को लेकर पूर्व चेयरमैन टामन सोनवानी सहित कई लोगों के खिलाफ बालोद के अर्जुन्दा थाने में शिकायत दर्ज की गई है। अर्जुन्दा क्षेत्र निवासी अभ्यर्थी की शिकायत पर एफआईआर नंबर 00028/24 धारा 120 बी, आईपीसी,420 आईपीसी ,12 पीआरई के तहत मामला दर्ज किया गया है। एफआईआर को शिकायत पोर्टल पर सेंसिटिव रखा गया है। पुलिस ने अभ्यर्थी की शिकायत पर अब इस मामले की जांच शुरू कर दी है। दरअसल, अर्जुन्दा क्षेत्र निवासी अभ्यर्थी ने शिकायत में बताया कि 2021 में सीजीपीएसी की परीक्षा में शामिल हुआ था। प्रिलिम्स और मेंस पास करने के बाद इंटरव्यू तक पहुंचा था। उसका इंटरव्यू अच्छा गया था, उसने सारे सवालों के जवाब भी अच्छे से दिए थे। इसके बावजूद उसका चयन नहीं हो सका, जबकि जिनका इंटरव्यू अच्छा नहीं गया, जो इस इंटरव्यू में जल्दी बाहर आ गए ऐसे लोगों का इसमें चयन हो गया।

अभ्यर्थी ने आरोप लगाया कि चयन सूची में पीएससी के तत्कालीन चेयरमैन टामन सिंह सोनवानी का बेटा, बहू, पुत्री सहित रिश्तेदारों और कांग्रेसी नेता, अधिकारियों और प्रभावशाली लोगों के करीबियों का चयन हुआ। इसके अलावा प्रोफेसर भर्ती में जो लोग परीक्षा में बैठे नहीं थे ऐसे उम्मीदवारों का चयन हुआ।

इस मामले में पीड़ित अभ्यर्थी ने अर्जुन्दा थाने में शिकायत दर्ज कराई। फिलहाल, पूरे मामले की जांच पुलिस द्वारा की जा रही है। कहा जा रहा है जांच के बाद मामले में जल्द ही कुछ लोगों की गिरफ्तारी भी की जाएगी।

अनियमितता के कारण सी जी पीएससी में नहीं हुआ चयन, अब युवक ने उठाया यह कदम

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग सी जी पीएससी 2021 की चयन में गड़बड़ी और भ्रष्टाचार के आरोप में तत्कालीन अध्यक्ष टामन सिंह सोनवानी सहित अन्य के खिलाफ बालोद जिला के अर्जुन्दा थाना में एफआईआर दर्ज की गई है। समूचा मामला 2021 में हुई छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग द्वारा पीएससी परीक्षा में हुई गड़बड़ी और भ्रष्टाचार का है। इंटरव्यू तक पहुंचने वाले एक युवक की शिकायत पर अर्जुन्दा थाना पुलिस इस मामले में एफआईआर दर्ज किया है। पुलिस की माने तो पिछले सीजी पीएससी परीक्षा थी। उसमें एक युवक द्वारा लिखित आवेदन देकर रिपोर्ट दर्ज कराया है। कि सीजी पीएससी में अनियमितता हुई है जिसके कारण उस प्रार्थी का चयन नहीं हो पाया है। उस पर 28 / 24 थाना अर्जुन्दा में अपराध दर्ज किया गया है। वहीं भ्रष्टाचार अधिनियम 420 के तहत जांच के लिए राज्य सरकार द्वारा संबंधित एजेंसी को सौंपी जाएगी। अग्रिम विवेचना के लिए मामले की डायरी उन्हें सौंपी जायेगी।

मंत्री बृजमोहन अग्रवाल की माता पिस्तादेवी पंचतत्व में विलीन

रायपुर,28फरवरी 2024(ए)। मंत्री बृजमोहन अग्रवाल की मां पिस्तादेवी का मंगलवार शाम को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार बुधवार को मारवाड़ी श्मशान घाट में किया गया। बृजमोहन अग्रवाल ने अपनी मां के पार्थिव देह को कंधा दिया। प्रदेश भाजपा सह प्रभारी नितिन नबीन भी अंतिम यात्रा में शामिल हुए। दरअसल, अंतिम यात्रा मंत्री के निज आवास मौलश्री विहार से निकाली गई। जहां से महावीर गौशाला और रामसागर पारा भी ले जाया गया। इससे पहले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, राज्यपाल विश्वभूषण, प्रदेश सरकार के सभी मंत्री विधायक और सांसदों ने घर पर श्रद्धांजलि अर्पित की थी। बता दें कि, पिस्ता देवी ने 27 फरवरी को 91 साल की उम्र में अंतिम सांस ली। वो पिछले कुछ दिनों से बीमार थीं और रायपुर के निजी अस्पताल में भर्ती थीं। पिस्ता देवी अग्रवाल समाज के राष्ट्रीय संरक्षक और समाजसेवी रामजीलाल अग्रवाल की धर्मपत्नी थीं।

भ्रष्ट कर्मचारी को नौकरी से बहाल मामले के आदेश को हाईकोर्ट ने किया निरस्त

रायपुर,28 फरवरी 2024(ए)। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि विभागीय जांच अगर सही नहीं है तो फिर से जांच के लिए फाइल लौटाने पर दोषी कर्मचारी को बहाल नहीं किया जा सकता। डिवीजन बेंच ने राजनांदगांव जिले के छुरिया नगर पालिका परिषद के कर्मचारी को बहाल करने सिंगल बेंच के आदेश को निरस्त कर दिया है। साथ ही नगर पालिका के सीएमओ को छह सप्ताह के भीतर विभागीय जांच पूरी करने का आदेश भी दिया है। दरअसल, नगर पालिका परिषद में पदस्थ लेखापाल भूपेश गंधर्व ने साल 2013-14 में झारखंड बाढ़ आपदा राहत कोष की राशि में हेराफेरी की थी। आरोप है कि उसने राहत कोष के पैसे का गबन कर लिया। इस मामले की जांच कराई गई, जिसमें उसे दोषी पाया गया। जिसके बाद

उसे नगर पालिका की सेवा से बर्खास्त कर दिया गया।

नगर पालिका से नौकरी से निकाले जाने पर भूपेश गंधर्व ने 2017 में हाईकोर्ट में याचिका दायर की। इस मामले की सुनवाई सिंगल बेंच में हुई। सभी पक्षों को सुनने के बाद सिंगल बेंच ने विभागीय जांच अधूरी होने और याचिकाकर्ता को सुनवाई का अवसर नहीं देने पर बर्खास्तगी आदेश को निरस्त कर दिया। साथ ही याचिकाकर्ता कर्मचारी को नौकरी में बहाल करने और उसके सभी देयकों का भुगतान करने का आदेश दिया। इधर, नगर पालिका परिषद छुरिया ने सिंगल बेंच के फैसले को चुनौती देते हुए एडवोकेट संदीप दुबे के माध्यम से डिवीजन बेंच में अपील की। इसमें बताया गया कि नगर पालिका अधिनियम के प्रावधान के अनुसार संबंधित कर्मचारी को सुनवाई का पूरा अवसर दिया गया है। विभागीय जांच अगर सही नहीं है तो फाइल फिर से जांच के लिए लौटाया जाए तब भी कर्मचारी को दोष मुक्त नहीं किया जा सकता है और न ही उसकी सेवा बहाल की जा सकती है। क्योंकि प्रारंभिक जांच में दोष सिद्ध हो चुका है।

इस केस की सुनवाई करते हुए चीफ जस्टिस रमेश कुमार सिन्हा और जस्टिस अरविंद कुमार वर्मा की डिवीजन बेंच ने नगर पालिका के तर्कों पर सहमति जताई। डिवीजन बेंच ने कहा कि अगर सिंगल बेंच को लगा कि याचिकाकर्ता को सुनवाई का अवसर नहीं दया गया है तो सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत उसे फिर से जांच के लिए भेजा जा सकता है। लेकिन, नौकरी से बहाल करना गलत है। हाईकोर्ट ने सिंगल बेंच के कर्मचारी की बहाली आदेश को निरस्त कर दिया है। साथ ही नगर पालिका परिषद को छह सप्ताह के भीतर विभागीय जांच पूर्ण करने का आदेश दिया है।

महिला नक्सली का आत्मसमर्पण

दंतेवाड़ा,28 फरवरी 2024 (ए)। लाल आतंक को लगातार झटके पे झटका लग रहा है। लोन वर्राटू (घर वापस आइये)अभियान से प्रभावित होकरएक लाख की इनामी महिला माओवादी ने आत्मसमर्पण कर दिया है।. आत्म समर्पित माओवादी

कटेकल्याण एरिया कमेटी के पुसगुन्ना पंचायत में सक्रिय थी। समर्पित महिला माओवादी नक्सली बंद सप्ताह के दौरान रोड खोदकर मार्ग अवरोध करने की घटनाओं में शामिल थी. इनामी महिला माओवादी का नाम गंगा मुचाकी है।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह*(पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)